RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल—011/2021-23

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 50, अंक : 31-32 एक प्रति 10 : रुपये
कुल पृष्ठ : 44
रविवार 5 नवम्बर एवं 12 नवम्बर 2023
विक्रमी सम्वत् 2080, सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 199 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष—50, अंक : 31-32, 5 नवम्बर-12 नवम्बर 2023 तदनुसार 20-27 कार्तिक, सम्वत् 2080 मूल्य 10 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का ऋषि निर्वाण एवं दीपावली विशेषांक

आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

फिर दिवाली आई

लेo—स्व. पं. सत्यपाल 'पथिक'

यह आ गई है आ गई लो फिर दीवाली आ गई।
दिल पर ऋषि की याद फिर बन के घटा सी छा गई।
जिस दिन हुए संसार में दर्शन ऋषि के आखिरी।
सुन लो कथा उस दिन की जो पत्थर को भी पिघला गई।

अजमेर की भूमि थी वह और वक्त था वह शाम का।
इक जोत जब बुझने लगी हर जिन्दगी घबरा गई।
अब तक पिये कांचो ज़हर पूरा महीना हो गया।
सारा जिस्म छलनी हुआ नस-नस चुभन तड़पा गई।

अन्दर से जिसकी नाड़ियां उस कांच ने थीं काट दीं।
और जहर की तासीर भी अपना असर दिखला गई।
वेदों में जितने मन्त्र हैं इतने ही छाले देह पर।
प्यारे ऋषि की यह दशा भक्तों के दिल दहला गई।

सारे बदन में दर्द था दुःखता था चाहे रोम-रोम।
पर मुस्कराहट अन्त तक चेहरे का साथ निभा गई।
यह तो वही काया है जो रखती थी ताकत शेर की।
और अब बड़ी मजबूर है गुल की तरह कुम्हला गई।

उसने कहा जब खोल दो दरवाजे और सब खिड़कियां।
यह बात ही अब कूच का बस वक्त समझा गई।
और फिर कहा आकर मेरे पीछे खड़े होवो सभी
खुद ली समाधि की दशा जो अपूर्व दृश्य बना गई।

मन्त्रों का उच्चारण किया और प्रेम से सन्ध्या करी।
फिर लेटते तख़्त पर जिह्वा यह बोल सुना गई।
अच्छी करी लीला प्रभु इच्छा तुम्हारी पूर्ण हो।
यह कह के आंखें मूंद लीं बिजली सी इक लहरा गई।

फिर सांस खींचा जोर से और तन से बाहर कर दिया।
बस यह हवा जाली हुई परलोक में पहुंचा गई।
लो देखते ही देखते पिंजरे का पंछी उड़ गया।
हर दिल की धड़कन रुक गई हर इक नजर पथरा गई।

ऐसी लगी इक चोट सी कैसे कहूं कैसी लगी।
दिल की कली जल कर रही हर आंख जल बरसा गई।
जग से दयानन्द नाम का इक रहनुमा जाता रहा।
यह खबर थी सुनकर जिसे सारी जमीं थर्रा गई।

रुक जा 'पथिक' लिखते हुये आंखों में आंसू आ गए।
सूखा गला दिल भर गया विरती तेरी चकरा गई।

दिव्य महापुरूष–महर्षि दयानन्द

ले०—श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

भारतीय धर्म, संस्कृति, परंपरा में जहां दीपावली का विशेष स्थान है, वही आर्य समाज के इतिहास में दीपमाला चिरस्मरणीय है। दीपमाला भारतीयों का धार्मिक ऐतिहासिक और ऋतु सम्बन्ध महान पर्व है। इस अन्धकारमयी रात को जगमगाते दीपक इनको ज्योति पर्व सिद्ध करते है। महर्षि दयानन्द जी ने अपने महान कार्यों, विचारों और जीवन से इस पर्व की पवित्रता और प्रकाश इन दोनों रूपों को सर्वथा चरितार्थ किया है। आत्म उन्नति और जातीय उत्थान के लिए आप्त पुरूषों के जीवन सदा ज्योति स्तम्भ का काम किया करते हैं। इस संसार में जब मनुष्य सन्मार्ग से भटक जाता है और पाप-ताप के भयानक गढ़ों में गिर कर महाकष्ट से बिलबिलाने लगता है तो यही ज्योति उसे सत्पथ की खोज में सहायता देती है। महापुरूषों का कार्य चिरस्थाई नहीं हो सकता यदि उसको उनके जीवन के साथ ही समाप्त होने दिया जाए और उसे इस योग्य बनाया जाए कि आने वाली पीढ़ियां उसका स्मरण करके लाभ उठा सकें। यही कारण है कि साहित्य में महापुरूषों के जीवन चरित्र को एक विशेष स्थान प्राप्त है।

महर्षि दयानन्द एक विलक्षण प्रकार के महापुरूष थे। उनका जीवन हमारे सामने दो पक्ष प्रस्तुत करता है। एक ओर वे जगद् गुरू हैं और दूसरी ओर जननी जन्मभूमि के कट्टर भक्त। जगद्गुरू के रूप में उनकी शिक्षा और उनका परिश्रम सारे जगत् के कल्याण के लिए था। वे मनुष्य मात्र ही नहीं बल्कि प्राणीमात्र का भला चाहते थे। इस दृष्टि से सारे विश्व के बन्धु थे। स्वदेश और विदेश उनकी दृष्टि में समान था। भारतवासियों के मिथ्या विश्वास और अविद्या अन्धकार को देखकर उनका हृदय जितना व्याकुल होता था उतना ही अन्य देशवासियों के भ्रम-भूतों को देखकर भी व्याकुल होता था। इसलिए आत्मिक सद्वैद्य बनकर जहां उन्होंने ईसाईयत और इस्लाम के मतों का खण्डन किया वहीं पर उन्होंने पौराणिकों के अन्धविश्वासों को भी दूर करने के लिए भरसक प्रयास किया। जिस प्रकार एक शल्य चिकित्सक की चीर-फाड़ रोगी को कष्टदायक होने पर भी उसे स्वस्थ बनाने के लिए की जाती है, इसी प्रकार इन मतवादियों का खण्ड़न भी वास्तव में उनका महाकल्याण ही था। ऋषिवर मनुष्य मात्र को मनुष्य पूजा, मूर्ति पूजा और नाना प्रकार की भ्रममूलक अविद्या जन्य बातों से निकाल कर एक ईश्वर के उपासक और एक ही सत्य सनातन धर्म के अनुयायी बनाना चाहते थे। वे संसार में स्वतन्त्रता के अग्रदूत थे और सब प्रकार की परतन्त्रता की बेड़ियों को काट कर मनुष्य समाज को स्वतन्त्रता के वायुमंडल में ले जाना ही उनका मिशन था। वह वेदों को आर्यावर्त में पैदा होने वालों के लिए ही नहीं अपितु वेदों के पढ़ने का अधिकार संसार के प्रत्येक नर-नारी तक के लिए सिद्ध करते थे। विधवाओं, अनाथों, अछूतों और गौ आदि मूक पशुओं की दुर्दशा को देखकर उनके हृदय में एक टीस सी उठती थी। इसलिए उन्होंने इनके दु:खों को दूर करने का भारी यत्न किया था।

मनुष्य जाति पर सबसे बड़ा उपकार उन्होंने यह किया कि संसार को वेद का पता दिया। वेद का महत्व क्या है? इसका अनुमान हम नहीं लगा सकते परन्तु विद्वान लगा सकते हैं। प्रोफेसर मैक्समूलर अपनी एक पुस्तक में प्रश्न उठाता है और उसका उत्तर स्वयं देते हुए कहता है कि यदि मुझसे पूछा जाए कि उन्नीसवीं शताब्दी का सबसे बड़ा आविष्कार क्या है तो मेरे विचार से इस शती का सबसे बड़ा आविष्कार वेद हैं क्योंकि इससे संसार के इतिहास को पूर्ण करने में सहायता मिलती है। ऋषि दयानन्द ने न केवल हमें वेद का ज्ञान कराया अपितु वेदार्थ का सच्चा ढंग भी बताया। उन्होंने केवल सूर्य ही नहीं दर्शाया बल्कि दूरबीन यन्त्र भी दिया जिसे नेत्रों पर चढ़ाकर सूर्य के सौन्दर्य को देख सके। ऋषि के आगमन से पूर्व वेद के मनमाने अर्थ किए जाते थे। जिन्हें पढ़-सुन कर कोई भी वेद की ओर आकृष्ट नहीं हो सकता था परन्तु जब महर्षि ने वेद का सत्यार्थ प्रकाश किया तो संसार भर के विद्वानों की आंखें खुल गई। आज संसार के सभी मतों के विद्वान वेदों के महत्व को समझने लगे हैं। इसका श्रेय दयानन्द को ही है।

देशभक्त के रूप में भी स्वामी दयानन्द जी का काम अद्भुत था। उनकी देशभक्ति स्वार्थ शून्य और उनके विशाल विश्व प्रेम का ही अंग थी। भारत जो कभी संसार का गुरू था उस समय दीन-हीन अवस्था में था। महर्षि ने इस देश का अन्न जल खाया पिया था। इस देश के दुखों को दूर करना वे अपना विशेष कर्त्तव्य समझते थे। वे भारत का हित भी अधिकतर इसलिए चाहते थे क्योंकि उनका विश्वास था कि आर्यावर्त में सुख शान्ति होने से ही सारे संसार में सुख और शान्ति का राज्य हो सकता है। स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार, बाल विवाह की प्रथा को रोकना, ब्रह्मचर्य का सेवन, स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार, एक राष्ट्रभाषा आदि देशोन्नति के विभिन्न परन्तु अत्यावश्यक साधन महर्षि दयानन्द को ही सूझे थे। वह कौन था जिसने सबसे पहले भारत के लिए स्वराज्य का नाद गुञ्जाया तथा स्थान-स्थान पर अपने ग्रन्थों में इसकी प्राप्ति के लिए प्रार्थनायें की तथा प्रेरणा प्रदान की। मूक प्राणियों पर हो रहे अत्याचारों को रोकने का यत्न, अनाथों की रक्षा और भारतवासियों को उनके उज्जवल भविष्य के दर्शन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ही कराए।

आज ऋषि निर्वाण दिवस ऐसे महान निष्पक्ष और उदार महामानव के जीवन के आदर्शों को स्मरण करने और जीवन में उतारने का दिन है। महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज के जो दस नियम बनाए हैं उन नियमों पर चलकर कोई भी देश उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। आओ ऋषि मिशन को आगे ले जाने का संकल्प लें और अपने -अपने कार्य में जुट जाएं। यही हमारी ऋषि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है और यही दीपावली का पर्व हमें प्रेरणा देता है कि वेद की ज्योति घर-घर में जलती रहे। दिवाली के दिन जगह-जगह ऋषि निर्वाणोत्सव पर महर्षि जी को लोग याद करेंगे, यही समय होता है जब किसी संस्था को अपने अतीत की तरफ देखते हुए अपने भविष्य को निश्चित करना चाहिए। सम्भवत: ऐसी स्थिति के लिए राष्ट्रकवि मैथिलिशरण जी ने कहा था:-

हम कौन थे क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर, ये समस्याएं सभी।।

युग पुरुष का निर्वाण

ले०—श्री प्रेम कुमार महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

दीपावली हमारा ज्योति पर्व है जो कार्तिक बदी अमावस्या को मनाया जाता है। भारत के लोग इस अन्धकार से भरी हुई अमावस्या को प्रकाश में बदलने का भरसक प्रयास करते हैं। क्योंकि प्रकाश सभी को प्रिय है और प्रकाश में ही संसार के सभी पुण्य कार्य सम्पन्न होते हैं। अन्धकार किसी को भी प्रिय नहीं है। **तमसो मा ज्योतिर्गमय** प्रभु हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो हम यह प्रार्थना करते हैं। क्योंकि सभी प्रकार के पापाचार अन्धकार में होते हैं। इसलिए इस पर्व के पीछे यही भावना काम करती है कि हम अन्धकार को कहीं न रहने दें। न वह हमारे मनों में रहे और न हमारे जीवन में रहे, न हमारे परिवार में रहे, न हमारे घर में रहे और न हमारे देश में रहे।

कई लोगों का विश्वास है कि इस दिन भगवान राम 14 वर्षों का वनवास काटकर तथा विजयदशमी के दिन रावण का वध करके उसके पश्चात दीपावली के दिन सीता व भाई लक्ष्मण के साथ वापिस अयोध्या आये थे और उनके आने की प्रसन्नता में अयोध्या को दीपों से सजाया गया था और दीपमाला की गई थी। इसके बाद प्रतिवर्ष इस दिन यह पर्व अयोध्या में मनाया जाने लगा और इसके बाद सारे देश के लोग इसे मनाने लगे। परन्तु ऐसा ऐतिहासिक प्रमाणों से सिद्ध नहीं होता है। न तो ऐसा सिद्ध होता है कि विजयदशमी के दिन रावण का वध हुआ हो और न ही यह सिद्ध होता है कि दीपावली के दिन श्रीराम अयोध्या आए हों। परन्तु फिर भी यह मान कर कि इस दिन भगवान राम रावण पर विजय पाकर अयोध्या लौटे थे और उनके आने पर दीपमालाएं की गई थी तो इससे भी हमें प्रेरणा मिलती है। राम ने आसुरी शक्ति का नाश करके धर्म की स्थापना की थी तो हमें भी इस दिन अपनी आसुरी वृत्तियों को निकाल कर अपने हृदय में ज्ञान का दीपक जला कर धर्म की स्थापना करनी चाहिए।

जहां इस पर्व पर हम भगवान राम को याद करते हैं वहां आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को भी याद करते हैं क्योंकि इसी ज्योति पर्व पर उन्होंने अपना भौतिक शरीर छोड़ा था। यह ठीक है कि सन् 1883 को दीपावली के दिन वे इस संसार से विदा हुए थे परन्तु उनका जो ज्ञान का दीपक जलाया हुआ था वह उसके बाद भी जलता रहा और आज भी सारे संसार को आलोकित कर रहा है। उन्होंने जो वेद ज्ञान संसार को दिया था वह अब सभी स्थानों पर फैल रहा है।

अपनी मृत्यु से आठ वर्ष पूर्व उन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर दी थी और उनकी मृत्यु के समय तक अनेकों बड़े-बड़े नगरों-महानगरों में आर्य समाजों की स्थापना हो चुकी थी। जहां महर्षि की मृत्यु हुई थी वहां पर परोपकारी सभा की स्थापना उनके काल में ही शुरू हो गई थी। महर्षि दयानन्द जी चारों वेदों का भाष्य करना चाहते थे परन्तु अपने जीवन काल में यजुर्वेद का भाष्य पूरा करके ऋग्वेद के कुछ मण्डलों का भाष्य ही कर पाये थे और जब उन्हें पता चला कि उन्हें जगन्नाथ के द्वारा विष दे दिया गया है तो उनके मुख से शब्द निकले थे कि जगन्नाथ तू नहीं जानता कि तूने कितना बड़ा अनर्थ कार्य किया है। मेरा बहुत सा कार्य अभी अधूरा रह गया है। परन्तु फिर भी ऋषि को यह संतोष था कि जो ज्योति मैंने आर्य समाज के रूप में प्रज्जवलित की है वह भारत में ही नहीं एक दिन सारे संसार में फैल जाएगी और मेरे अधूरे कार्य को आर्य समाज पूर्ण करेगा और यह सच्चाई भी है कि महर्षि के बाद चारों वेदों का भाष्य किया गया जो आज सभी स्थानों पर उपलब्ध है।

उनकी इच्छा थी कि सारे संसार में वेदों के प्रचार-प्रसार का कार्य, अनाथ रक्षण, अबला उद्धार, दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा तथा लोकोपकार के कार्य निरन्तर चलते रहें। वेद ज्योति का प्रकाश घर-घर पहुंचाना उनका उद्देश्य था। वेद के प्रचार प्रसार के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया। उन्होंने वेद की ज्योति को सारे संसार में फैला दिया। यह प्रकाश निरन्तर बढ़ता गया इसलिए उन्होंने अपना शरीर छोड़ने के समय भी ज्योति पर्व को चुना ताकि इस पर्व को मनाते हुए लोग ज्योति के महत्व को समझें। इसके साथ ही वे यह भी कहते थे कि मेरी मृत्यु के शोक में लोग दु:खी न हों। बल्कि इस पर्व को मनाते हुए मेरे अधूरे कार्य को पूरा करने का संकल्प लेते रहें। आर्य बन्धुओं यह समय चिन्तन करने का समय है, आर्य समाज के कार्यों को नई दिशा देने का समय है। महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने का समय है। केवल महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस मनाकर ही अपने दायित्व से मुक्त नहीं होना है अपितु महर्षि दयानन्द के संदेश को घर-घर पहुंचाने का संकल्प भी हमें लेना है। दीपावली का पर्व हमें प्रेरणा देता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जो वेद रूपी ज्ञान की ज्योति जलाई थी उस ज्ञान की ज्योति को हमेशा जलाए रखे। वेद रूपी ज्ञान की ज्योति कभी बुझनी नहीं चाहिए। आज का मानव ज्ञान रूपी ज्योति के अभाव में ही अन्धकार में भटक रहा है। अगर हम महर्षि दयानन्द का सन्देश घर-घर पहुंचाकर वेद ज्ञान को फैलाने का कार्य करते हैं तो भटके हुए लोगों को सही मार्ग मिलेगा। महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस हर वर्ष हमें यही प्रेरणा देता है कि हम बाहर की ज्योति के साथ-साथ अन्दर की ज्योति को भी जलाएं। बाहर के प्रकाश के बिना हमारा जीवन चल सकता है परन्तु जिसके अन्दर ज्ञान रूपी प्रकाश नहीं है वह फिर मनुष्य नहीं रह जाता है। मनुष्य की परिभाषा है **मत्वा कर्माणि सीव्यति** अर्थात् जो सोच विचार कर कार्य करता है वही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। बिना ज्ञान के व्यक्ति सोच विचार नहीं कर सकता और बिना ज्ञान के किया गया कर्म श्रेष्ठ नहीं होता। इसीलिए दीपावली का पर्व चिन्तन और मनन का पर्व है। यह पर्व हमें आत्मावलोकन की प्रेरणा देता है। अपने-अपने घरों में दीपक प्रज्जवलित करते हुए हम अवश्य चिन्तन करें कि कहीं हमारे जीवन में तो अन्धकार नहीं है और अगर कहीं पर है तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा दिए गए वेद ज्ञान रूपी प्रकाश से उस अन्धकार को भी मिटाएं।

वह दीप जो संसार को प्रकाश का मार्ग दिखा गया

ले०—श्री सुधीर शर्मा, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

किसी कवि ने बड़े सुन्दर शब्दों में लिखाः-

दीप बनकर कितने ही आये यहां सूर्य बनकर मगर कोई आ न सका ।

टिमटिमाते रहे वे जहां के तहां जग का अन्धकार कोई मिटा न सका ।।

दीपावली की रात हम पहले एक दीया जलाते हैं और उस दीये से फिर कई दीये जलते हैं और फिर वह समय भी आता है जब धीरे-धीरे सब दीये बुझ जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में आर्य समाज के रूप में एक दीया जलाया था, वेद की एक ज्योति जलाई थी। उस आर्य समाज रूपी दीये से तथा वेद की ज्योति से वे उस अंधकार को समाप्त करना चाहते थे, जो कई शताब्दियों से हमारे देश पर छाया हुआ था। आर्य समाज रूपी दीया जलाने के लिए और वेद की ज्योति को जलाने के लिए महर्षि ने अपना बलिदान दिया। वह बलिदान एक प्रकार से उस दीये का तेल था जिसके सहारे वह जलता रहा। उसी से फिर पं. गुरूदत्त, पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज आदि और भी कई दीये जलते रहे और उनका प्रकाश सारे देश में फैलता रहा। आर्य समाज ने देश की जो सेवा की है, उसके विषय में इतिहासकारों ने बहुत कुछ लिखा है। प्रायः सब यह कहते हैं कि देश के नवजागरण और नवनिर्माण में आर्य समाज का सबसे बड़ा योगदान रहा है। जब तक हम आजाद नहीं हुए थे, उस समय तक आर्य समाज एक ही समय में दो भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में लड़ाई लड़ रहा था। राजनैतिक क्षेत्र में भी और सामाजिक क्षेत्र में भी। उसने स्वाधीनता के संग्राम में अपनी जो आहुति दी थी, वह किसी दूसरी संस्था ने नहीं दी। आर्य समाज से प्रेरणा लेकर कितने ही लोग जेल गए और कितने ही फांसी पर भी चढ़ गए थे। जहां तक सामाजिक क्षेत्र का सम्बन्ध है, उसमें दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा, हिन्दी प्रचार, गौ रक्षा, स्वदेशी के पक्ष में अभियान इस प्रकार कई कार्य आर्य समाज ने किए थे। यह भी एक ऐतिहासिक सत्य है कि जो कुछ आर्य समाज ने किया था उसके कारण ही देश में जागृति आई और हमारा देश स्वतंत्र हुआ।

आज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के निर्वाण दिवस पर बड़े गहन आत्म चिन्तन का अवसर है। आर्य समाज ऋषिवर के सिद्धान्तों, आदर्शों और विचारों को प्रसारित करने में कहां तक सफल हुआ है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आर्य समाज का प्रचार जनसाधारण तक बढ़ने नहीं पाया। आर्य समाज के पास दूसरे सम्प्रदायों की भांति कोई ऐसा खिलौना नहीं है जो लोगों को मनोरंजन के लिए दे सके। आर्य समाज के नियमों पर चलना तो तेज तलवार की धार पर चलने के समान है। आर्य समाज के पास उस पुण्यात्मा का दिया हुआ कोई गुप्त मन्त्र नहीं जो दूसरों को कोई चमत्कार दिखाने का प्रयास कर सके। दिव्यात्मा दयानन्द ने तो आर्य समाज को एक खुली पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया है। आर्य समाज का मार्गदर्शन स्पष्ट है। किसी को भ्रमित नहीं करता। धर्म का उपदेश तो सब देते हैं। परन्तु संसार का कोई भी समुदाय आर्य समाज के दस नियमों के अतिरिक्त कोई नियम बताये जो आर्य समाज के घेरे में न आता हो। ऋषि दयानन्द का भक्त अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहता, वह तो संसार का उपकार करना अपना कर्त्तव्य समझता है। वह तो केवल एक निराकार ईश्वर की उपासना करता है।

दीपावली की रात को हम फिर दीये जलाएंगे। दीपावली से जो प्रकाश होता है वह बहुत थोड़े समय के लिए होता है और फिर वे सब दीये बुझ जाते हैं और उसके साथ ही अंधेरा हो जाता है। परन्तु महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के रूप में जो दीपक जलाया है उस दीपक ने संसार को नई दिशा प्रदान की। अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी। वेद ज्ञान की ज्योति के प्रकाश से सारे संसार को आलोकित किया। महर्षि के आने से पूर्व लोग अंधकार में ठोकरें खा रहे थे, अंधविश्वासों में फंसे हुए थे। महर्षि ने लोगों को अंधविश्वासों से छुड़ाया और परमात्मा की भक्ति का रास्ता बताया। उन्होंने वेद का उदाहरण देते हुए बताया कि परमात्मा एक है उसी की उपासना करनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द यदि भारत में न आते तो वेदों के बारे में व परमात्मा के बारे में जो भ्रांतियां फैली हुई थी वह कभी दूर नहीं हो सकती थी। वेदों तक पहुंच न होने के कारण महात्मा बुद्ध जैसे तपस्वी ने वेद पढ़े बिना ही लोगों के कहने पर यह मान लिया कि वेदों में हिंसा है और कहा कि जिन वेदों में जीव हत्या की बात लिखी है मैं ऐसे वेदों को नहीं मानता। अज्ञानता के कारण वेदों के मनमाने अर्थ किए गए। महर्षि ने वेद मन्त्रों के अर्थ करके यह बताया कि वेदों में कहीं भी किसी भी जीव की हिंसा नहीं है। वेद तो अहिंसा का सन्देश दे रहे हैं और एक परमात्मा की उपासना सिखाते हैं। जो परमात्मा सर्वव्यापक है, सर्वान्तर्यामी है, सर्वज्ञ है, निराकार है, सर्वशक्तिमान है, अनादि है, अनन्त है और निर्विकार है उसी की उपासना करनी चाहिए। महर्षि दयानन्द जी ने वेदज्ञान के द्वारा लोगों को सन्मार्ग दिखाया।

दीपावली का महान पर्व हमें प्रेरणा देता है कि हम महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग पर चलते हुए उनके उद्देश्य को पूर्ण करने का प्रयास करें। महर्षि दयानन्द ने जो वेदज्ञान की ज्योति जलाई है उस ज्योति को हम कभी बुझने न दें। अगर हम उनके द्वारा बनाए गए आर्य समाज के नियमों पर चलते हैं और आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करते हैं तो यही हमारी उस महान ऋषि के प्रति श्रद्धांजलि होगी।

राष्ट्रोन्नति की ज्योति के प्रबल समर्थक महर्षि दयानन्द

ले०—श्री अशोक परूथी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अन्य क्षेत्रों में सुधार के साथ-साथ राष्ट्रीय जागरण में भी अहम भूमिका निभाई है। महर्षि दयानन्द सरस्वती एक ऐसे ही दिव्यपुरूष थे, जिन्होंने बड़ी गहराई से भारत की इस पतनावस्था का अध्ययन करके उसका उपाय भी हमारे समक्ष रखा। उन्होंने अपनी दृष्टि बहुत पीछे दौड़ाई और पाया कि हमारे पतन का आरम्भ महाभारत के अपार नरसंहार के साथ हुआ। क्योंकि उस समय बड़े-बड़े विद्वान और शूरवीर मारे गए जिनके अभाव में हमारे धर्म ने धीरे-धीरे ढ़ोंग की चादर ओढ़ ली। धर्म से नैतिकता और सच्चरित्रता का निष्कासन होकर उसमें आडम्बर एवं दिखावे का समावेश हुआ। जब व्यक्ति इन गुणों से विहीन हो जाता है तो व्यक्तिगत और सामाजिक पतन होना स्वभाविक है। इसी पतन ने धीरे-धीरे ऐसा दीन-हीन बना दिया कि हम अपना सर्वस्व खोकर मानो अपने ही कन्धों पर अपनी ही लाश लिए नाममात्र का जीवन जीने पर बाध्य हो गए। महर्षि दयानन्द को जब कारण का पता चला तो वे इसके निवारण के लिए मन, वचन और कर्म से पूरी तरह से जुट गए। उन्होंने सर्वप्रथम इस राष्ट्र की प्रगाढ़ निद्रा में सोई हुई जनता को जगाने का संकल्प लिया। धर्म व्यक्ति के आचार-व्यवहार से जुड़ी एक कड़ी है जो उसकी चतुर्दिक उन्नति का आधार है। उस टूटी कड़ी को जोड़ने का बीड़ा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने उठाया और राष्ट्र में एक नई चेतनता की लहर पैदा की। एक कुशल चिकित्सक के समान पहले रोग के कारण का पता लगाया और फिर उपचार में जुट गए। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्तुत यह धार्मिक जागरण ही राष्ट्रीय जागरण का सबसे प्रमुख कारण बना।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के शब्दों में- महर्षि दयानन्द उन महापुरूषों में से थे जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया। उनके आचार सम्बन्धी पुनरूत्थान के कारण ही यह सम्भव हुआ। नेताजी के शब्दों में वह सच्चाई है जिसे आज विस्तृत किया जा रहा है। धर्म व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के प्रत्येक क्रियाकलाप का एक अभिन्न अंग है। इसीलिए इसके पुनरूत्थान ने जागरण के चतुर्दिक दरवाजे खोल दिए। महर्षि दयानन्द के इसी प्रयास ने उन्हें समाज सुधारकों की पंक्ति में सर्वोच्च स्थान प्रदान किया। समाज और राष्ट्र के लिए उनके योगदान का योगी अरविन्द के इन शब्दों से पता चलता है कि यदि सभी समाज सुधारकों को पर्वत शृंखलाएं मान लिया जाए तो दयानन्द समस्त गिरिशिखरों के मध्य एक ऐसे सर्वोच्च शिखर है जो अपनी दिव्यता एवं कर्त्तव्यता के कारण अपने आप में ज्योतिर्मय है और चारों ओर प्रकाश फैला रहे हैं।

महर्षि ने केवल छुट-पुट सुधार नहीं किया बल्कि उनकी दृष्टि भारतीय जर्जर समाज के आमूलचूल परिवर्तन पर थी। यह ठीक है कि समय से पूर्व ही 1857 की क्रान्ति का प्रस्फुटन होने के कारण अपने ही भीतर के कुछ राष्ट्रद्रोही गद्दारों के कारण यह क्रान्ति असफल रही, मगर महर्षि दयानन्द इस असफलता से निराश व हताश नहीं हुए बल्कि दुगुने उत्साह के साथ कार्यक्षेत्र में कूद पड़े। उन्होंने धार्मिक क्षेत्र पाखण्ड और अन्धविश्वास के ऊपर करारा प्रहार करके धार्मिक जगत में खलबली पैदा कर दी। भाग्य के भरोसे हाथ पर हाथ रखकर बैठे अकर्मण्य लोगों को उन्होंने कर्मवाद का पाठ पढ़ा कर अंगडाई लेने पर बाध्य कर दिया। केवल अपनी मुक्ति के जंगलों की राह पकड़ने वाले ब्रह्मवादियों के समक्ष उन्होंने त्रैतवाद का अमर वैदिक उपदेश रखा कि परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति ये तीन अनादि तत्व हैं। जीवात्मा परमात्मा का अंश नहीं बल्कि वह कर्म करने में स्वतन्त्र है। व्यक्ति चाहे तो अपने लिए स्वर्ग का निर्माण कर सकता है। उन्होंने सर्वहितार्थ आध्यात्मिकता और भौतिकता का समन्वय करके एक सर्व समर्थ वैदिक धर्म को हमारे सामने रखा। पण्ड़े पुजारी चौंके मगर महर्षि दयानन्द ने सभी कुरीतियों और कुनीतियों को उखाड़ फैंका। उनके जीवन का एक-एक क्षण समाज और राष्ट्र को समर्पित था। इसके लिए उन्हें बड़े से बड़ा कष्ट सहना पड़ा। मगर वे अपने जीवन तक की परवाह किए बिना निरन्तर उन बुराईयों को जड़मूल से उखाड़ने के लिए जूझते रहे जिन्होंने हमें पंगु बना रखा था। पोंगा पन्थियों के चंगुल में फंसकर धर्म अपने वास्तविक स्वरूप और बुनियाद को खो चुका था। महर्षि ने विज्ञान और बुद्धिवाद का इसमें पुनः समावेश करके एक नई दिशा दी। जड़ मूर्ति के समक्ष आंखें बन्द करके लोगों को उन्होंने चेतनता का वह अमर सन्देश दिया कि निराश और हताश भारतीय जनता अपने अंदर हलचल अनुभव करने लगी तथा कालान्तर में धीरे-धीरे कमर कस कर हर स्थिति से जूझने के लिए तैयार हो गई।

बन्धुओं महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश के द्वारा ही लोगों को स्वराज्य प्राप्त करने की राह मिली, लोग आजादी पाने के लालायित हो उठे। देश की आजादी में महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के लोगों का ८५ प्रतिशत योगदान है। लोकमान्य तिलक का कथन है कि दयानन्द स्वराज्य के प्रथम सन्देशवाहक थे। दादा भाई नौरोजी इस प्रकार कहते हैं कि मुझे स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों से स्वराज्य की लड़ाई में बड़ी प्रेरणा मिलती है। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र को जागृत करने में अहम भूमिका निभाई है। दीपावली के पावन पर्व पर महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा राष्ट्र के लिए किए गए कार्यों पर चिन्तन करते हुए राष्ट्र की उन्नति का संकल्प लें। महर्षि दयानन्द एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे। उनके अन्दर राष्ट्र प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ था। इसलिए उनके निर्वाण दिवस के अवसर पर अगर हम राष्ट्र की उन्नति के लिए संकल्प लेते हैं तो यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक : दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

विश्व के सब देशों में भारत की एक विशिष्टता रही है। यह ऐसी अद्‌भुत और विश्व-इतिहास में असामान्य और चमत्कारी है कि इस देश का लाखों-करोड़ों वर्षों का इतिहास इससे देदीप्यमान है। भारत-माता के इस अनोखे और अद्वितीय वैशिष्ट्य का, संक्षेप में यदि उल्लेख करें तो वह है, मानव के व्यक्तिगत और सामाजिक-प्रत्येक क्षेत्र में हमारी मातृभूमि की गोदी का सदा हरा-भरा रहना। इसकी मिट्टी में खेलने वाले नौनिहालों का जीवन किसी भी सभ्य देश के लिए सदा ही परम गौरवास्पद और प्रतिस्पर्द्धात्मक रहा है। व्यक्तिगत दृष्टि से भारत भूमि ने अनेक जीवन्मुक्त, ऋषि, महर्षि, मुनि, परम योगी, साधक तपस्वी, मार्गदर्शक साधु, सन्त, महात्मा विद्वान् विविध-विद्या पारंगत इत्यादि का प्रसव किया है। साथ ही सामाजिक क्षेत्र में यशस्वी राजा, शासक, असिधारा पर खुला खेलने वाले शूरवीर, राजनीतिज्ञ, साम्राज्य संस्थापक, लक्ष्मी के वरद पुत्र, साहसी व्यापारी, व्यवसायी उद्योगपति इत्यादि ने विश्व-इतिहास के पृष्ठों पर अपनी अमित छाप डाली है। निःसंकोच कहा जा सकता है कि इन दोनों प्रकार की विभूतियों की अटूट शृंखला ने भारत-माता के ललाट को उन्मुक्त रूप में युग-युगान्तरों में समलंकृत कर रखा है।

आर्य जाति मार्ग भ्रष्ट

परन्तु कालचक्र ने भारत की इस स्थिति को बदला महाभारत युद्ध के पश्चात् भारत की आन्तरिक स्थिति में पतन का घुन लग गया। आलस्य, प्रमाद, अकर्मण्यता के साथ विभिन्न रूढ़ियां, पारस्परिक कलह और अन्ध-परम्पराओं का जाल बिछने लगा तथा एकता के सूत्र बिखरने लगे। व्यक्तिगत का प्राबल्य और सामाजिकता का ह्रास होने लगा। दूसरी ओर भारत की समृद्धि और उसके ऐश्वर्य को देख विदेशी ललचायी आंखों से इसकी ओर देखने लगे। भारत पर बाह्य आक्रमण होने लगे। सबसे पहला आक्रमण सिकन्दर का हुआ। दूसरा भारत की उत्तर दिशा से हूण, सोथियन और पारसोकों के हमले हुए। पर ये दोनों प्रकार के आक्रान्ता या तो वापस चले गए अथवा जो भारत में रह गए; वे इस देश की मुख्य सांस्कृतिक धारा में विलीन हो गए। उनका पृथक् अस्तित्व नहीं रहा। तीसरा धावा इस्लाम का हुआ। यह पहले दोनों प्रकार के आक्रमणों से सर्वथा भिन्न, अत्यन्त प्रबल, अधिक स्थायी और भयंकर दूरगामी था। मुस्लिम आक्रान्ता पहले केवल लूटमार के लिए आए, पर शीघ्र ही वे यहां हाकिम बनकर टिक गए। यद्यपि भारत के इतिहास में ऐसा समय कभी नहीं आया जब समूचे भारत पर एक छत्र मुस्लिम शासन हुआ हो। देश के अनेक भागों में सदा मुस्लिम शासकों के साथ युद्ध और संघर्ष होते रहे और हार-जीत के पलड़े द्रुतगति से डांवाडोल होते रहे। पर इस्लाम की धर्मान्धता और बलात् भारतीयों को अपने महजब में लाने के कुकृत्यों ने इस देश के समाज पर गहरा प्रभाव डाला। चौथा आक्रमण पश्चिम की गोरी जातियों का हुआ। ये लोग हाथ में तराजू और बाट लेकर सात समुद्र पार से यहां आए। यहां के ही हिन्दू-मुस्लिम निवासियों से छल-कपट द्वारा तलवार छीन उसी से उन्हें आपस में लड़ा-भिड़ा बन्दर बांट से देश के शासक बन गए। इस देश की सभ्यता, संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, धार्मिक विचार, शिक्षा-इत्यादि प्रत्येक दृष्टिकोण से सर्वथा विभिन्न, संख्या में अत्यल्प-फिर भी भारत जैसे विशाल और करोड़ों की संख्या वाले देश को उन्होंने अपना गुलाम बना लिया इससे क्या यह स्पष्ट अभिव्यक्त नहीं होता कि तत्कालीन भारत कितना जर्जरित, शक्तिहीन, नपुंसक, शतधाविच्छिन और स्थिति-प्रिय तथा मृतप्रायः हो चुका था।

आर्य जाति की यह स्थिति उच्च डिंडिमघोष से उस समय कह रही थी कि उसे चतुर और रोग के मूल तक पहुंचने वाले एक वैद्य की अविलम्ब आवश्यकता है। जिस प्रकार अर्जुन ने खांडव वन को दावानल से भस्मसात् कर वहां इन्द्रप्रस्थ के भव्य मनोहारी और चमत्कारी भवन निर्मित किए थे, इसी प्रकार भारत को एक ओर संवाहक और दूसरी ओर सर्जक दोनों गुण युक्त महापुरुष की आवश्यकता थी।

महर्षि का आगमन, जन्म, बचपन, शिवरात्रि का व्रत

इस पृष्ठभूमि में ऋषि दयानन्द का इस देश में अवतरण हुआ। कटियावाड़ (सौराष्ट्र) प्रान्त के मौरवी रियासत के अंतर्गत टंकारा नामक कस्बे में औदीच्च ब्राह्मण कर्षन जी के घर संवत् १८८१ फाल्गुन वदी १० शनिवार (१२-२-१८२४ ई०) को ज्येष्ठ पुत्र के रूप में मूलशंकर का जन्म हुआ। मूल नक्षत्र में उत्पन्न होने से मूलशंकर नाम रखा गया। दुलार में इस बालक को दयाराम भी पुकारा जाता था। कर्षन जी अपने समय के अच्छे साहूकार और विस्तृत भूमि के स्वामी थे। वह कट्टर शैव परिवार था। १४ वर्ष की आयु में मूलशंकर को यजुर्वेद कंठस्थ करने के साथ व्याकरण और शब्द रूपावली का अभ्यास करा दिया गया था। इससे पूर्व ८ वर्ष की आयु में मूल जी का उपनयन हो चुका था। मेधावी, अद्भुत स्मरण

शक्ति युक्त और पढ़ने में अत्यन्त रुचि रखने वाला होने के साथ, स्वभावत: विरक्त और एकांतप्रिय था। उसने काशी जाकर विद्या पढ़ने का आग्रह किया, पर पिता किसी प्रकार भी बालक को घर से बाहर भेजने को तैयार न थे। पिता उसे गृहस्थ और अपने कारोबार के बन्धन में डालना चाहते थे।

इस समय दो उल्लेखनीय घटनाएँ हुई जिन्होंने मूलशंकर के जीवन को विशेषत: प्रभावित किया। कर्षन जी कट्टर शैव थे। शिवरात्रि का त्यौहार आया और समस्त परिवार ने विधिवत उपवास रखा। १३ वर्षीय बालक मूलशंकर को भी पिता ने व्रत रखने का आदेश दिया, यद्यपि माता बालक को इस कष्ट में डालने के पक्ष में नहीं थी। शिव मन्दिर में सब भक्तजन एकत्र हुए। शिवलिंग की पूजा और मूर्ति पर फल-फूल मिष्ठान्नादि चढ़ाए गए। व्रत की विधि के अनुसार समस्त रात्रि जागकर पूजा करना आवश्यक है। पर निद्रा तो सबके लिए बलवती होती है। आधी रात होते बालक के पिता और पुजारी सहित सब भक्तजन निद्राग्रस्त हो गए। व्रत दृढ़ता से पालन करने की भावना वाला केवल मूलशंकर बालक अपनी आंखों पर जल के छींटे देता हुआ जागता रहा। उसने तब देखा कि एक चूहा शिवलिंग पर अठखेलियाँ करता हुआ नैवेद्य को खा रहा है। मूलशंकर को तो पिता ने बताया था कि शिव त्रिशूलधारी और दैत्य-दलनहारी हैं पर, यह क्या, वह अपने पर नि:शंक उछल-कूद करते चूहे को भी नहीं भगा सकता है? पिता को जगाकर उसने अपनी शंका निर्भयता से प्रकट कर दी। पिता के इस उत्तर से कि कलिकाल में साक्षात् शिव नहीं, उसकी मूर्ति की ही पूजा की जाती है मूल जी का समाधान नहीं हुआ और उसकी सच्चे शिव को जानने की जिज्ञासा प्रबल हो उठी।

बहिन और चाचा की मृत्यु

इस घटना के 5 वर्ष पश्चात् मूलशंकर की १४ वर्षीय बहिन की हैजे से मृत्यु हो गई सब सम्बन्धी क्रन्दन कर रहे थे पर बालक मूलशंकर जीवन की क्षण-भंगुरता तथा मृत्यु के अवश्यम्भावी होने की चिन्ता में ग्रस्त पत्थर की तरह चुपचाप खड़ा रहा इसके कुछ दिन पश्चात् ही मूलशंकर के चाचा की मृत्यु हो गई। यह चाचा सुपंडित और सच्चरित्र थे तथा मूलशंकर से विशेष स्नेह रखते थे। अब मूल जी अपने को संभाल न सके और उनके नैनों से अश्रु धारा बहने लगी। इस क्षण मूलशंकर के हृदय में दूसरी बड़ी समस्या पैदा हो गई यह मृत्यु क्या है और क्या इस पर विजय प्राप्त हो सकती है।

इधर पिता मूलशंकर को विवाह के बन्धन में बाँधने के लिए विशेषत: तत्पर हो गए। जिस पंडित से मूलशंकर पढ़ते थे, उसने भी कर्षन जी को सूचित कर दिया कि यह बालक विवाह नहीं करना चाहता है। पर पिता न माने और उन्होंने विवाह की तैयारी आरम्भ कर दी। मूलशंकर ने अब अपना मार्ग निश्चित कर लिया। संकल्प के धनी इसी युवक ने गृह-त्याग की योजना बना ली और 22 वर्ष की आयु में इसे कार्यान्वित कर दिया।

गृह त्याग: मूलशंकर से शुद्ध चैतन्य

वि. संवत् 1903 ज्येष्ठ मास में मूलशंकर ने गृह-त्याग किया और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की आकाँक्षा से सबसे पहले योग सीखने का निश्चय किया। उस क्षेत्र के शैला गांव में लाला भक्त नाम के एक योगी विख्यात थे। मूलशंकर कई दिन की यात्रा के बाद इस योगी के पास पहुँचा। मार्ग में ठग भिक्षुओं ने मूल जी के रेशमी-कपड़ों और आभूषणों पर फबती कसी। युवक ने इसके प्रत्युतर में सब रेशमी वस्त्र और आभूषण इन भिक्षुओं को दान कर दिए। लाला भक्त के पास कुछ दिन ठहर मूल जी की भेंट वहीं शैला ग्राम में एक ब्रह्मचारी से हुई। उसने मूल जी का नाम शुद्ध चैतन्य रख दिया। यहाँ पर शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी को सिद्धपुर के मेले का समाचार ज्ञात हुआ। योगियों की खोज में ब्रह्मचारी वहाँ गया। रास्ते मैं एक परिचित व्यक्ति ने इन्हें वैरागी वेश में देख इनके पिता को सूचना दे दी। साधुओं की संगति में बैठे शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी (मूल) को उनके पिता तलाश करके वहाँ पहुँच गए। पिता का क्रोध भड़क गया। पुत्र को गालियां देते हुए पिता ने पीटा और साधु वेश के कपड़े फाड़ दिए। सिद्धपुर में सिपाहियों के पहरे में ब्रह्मचारी को रखा गया। एक रात को भोर ३ बजे इन सिपाहियों को सोता देख बाहर निकल गए। दौड़ लगाकर प्रात: काल तक कुछ मील दूर निकल गए। दिन चढ़े एक मन्दिर के पास घने वृक्ष में छिपकर बैठ गए। सिपाहियों को मन्दिर के भीतर ढूँढते शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी ने देखा। किसी को वृक्ष पर तलाश करना सूझा ही नहीं। सिपाहियों के निराश हो वापस चले जाने पर शुद्ध चैतन्य ने अपनी पैदल यात्रा प्रारम्भ कर दी। सिद्धपुर मेले में ब्रह्मचारी की अपने पिता से यह अन्तिम भेंट थी।

नर्मदा तट पर 8 वर्ष तक

घर के बन्धनों से मुक्त हो शुद्ध चैतन्य ने योगियों की तलाश और अमृत पद प्राप्ति के लिए प्रयास रूप दोनों लक्ष्यों के लिए पूर्णत: जुट जाने की दिशा में नर्मदा नदी तट स्थित योगियों के आश्रमों में चक्कर लगाने आरम्भ कर दिए। लगभग 8 वर्ष तक वे नर्मदा तट पर रहे। यहां स्वामी पूर्णानन्द से शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी ने संन्यास की दीक्षा ली और दयानन्द नाम ग्रहण किया। आश्रम मर्यादा के अनुसार ब्रह्मचारी रहते वे भिक्षा नहीं मांग सकते थे। स्वयं पाकी होना आवश्यक था। पर संन्यासी हो जाने पर वे भिक्षा लेने के अधिकारी हो गए और साथ ही सम्बन्धियों द्वारा पहचाने जाने के भय से भी मुक्त हो गए। नर्मदा तट स्थित चाणोद आश्रम में कई योगियों से दयानन्द ने योग-शिक्षा प्राप्त की। यहां से वह आबू गए।

योगियों की खोज में उत्तराखण्ड की यात्रा

विक्रमी संवत् 1912 में हरिद्वार में कुम्भ का मेला था। दयानन्द के मन में अब उत्तराखण्ड की यात्रा का विचार था। कुम्भ-मेला

देखने के बाद दयानन्द ऋषिकेश होते हुए टीहरी गए। यहां एक तांत्रिक पण्डित द्वारा भोजन का निमंत्रण प्राप्त करने पर वहां पके हुए मांस को देख दयानन्द तत्काल वापस चले आए और इसी पण्डित द्वारा बाद में भेजे गए फल-दूध को स्वीकार किया। यहाँ तंत्र ग्रंथों का स्वामी जी ने अवलोकन किया और उनमें व्यभिचार तथा पैशाचिक अनुष्ठानों का वर्णन देख इनका सदा के लिए त्याग कर दिया। टिहरी से ये एक अन्य साधु के साथ केदार घाट, गुप्त काशी, गौरी कुण्ड, भीम गुफा, त्रियुगी नारायण आदि स्थानों और मन्दिरों को देखते हुए पुनः केदार घाट वापस आ गए। अब स्वामी जी एकांकी यात्रा कर रहे थे। उधर शीत ऋतु आरम्भ हो गई थी। फिर भी बीहड़ जंगलों और पर्वत शिखरों पर चढ़ते-उतरते भूखे-प्यासे किसी प्रकार ओखीमठ पहुंचे। दिन भर की कष्टप्रद यात्रा के बाद रात इस मठ में बिताई। यह मठ बड़ा प्रसिद्ध और धन-सम्पत्ति से पूर्ण था। यहाँ के महन्त ने दयानन्द के पवित्र जीवन और भव्य आकृति को देख उन्हें शिष्य बनने और बाद में मठ का स्वामी बनने का प्रलोभन दिया। स्वामी जी ने कहा, इस मठ की जितनी सम्पत्ति है मेरे पिता की सम्पत्ति भी उससे किसी अंश में कम नहीं थी। जब मैं उसे लात मार कर आया हूं तब इस मठ का मुझे क्या प्रलोभन है? यहाँ से जोशी मठ और बद्री नारायण गए। यहां से अलखनन्दा नदी के तट यात्रा करते हुए उसके उद्गम स्थान पर पहुंच गए। उनके शरीर पर साधारण पतला वस्त्र था। उधर, घोर शीत, भूख, थकावट ने उन्हें घेरा हुआ था। अलखनन्दा पार करने के लिए जब नदी में प्रविष्ट हुए, तो बर्फ के टुकड़ों से शरीर क्षत-विक्षत हो गया। ऐसा प्रतीत होता था कि मृत्यु सिर पर नाच रही हैं। पर दयानन्द ने धैर्य न छोड़ा। अपने जीर्ण वस्त्रों की पट्टी बना उसे रक्त युक्त घावों पर बाँधने लगे। चलने की शक्ति नहीं रही। ललचायी आंखों से वे इधर-उधर देखने लगे कि इस मनुष्य रहित स्थान में कोई सहायक मिल जाए। अत्यन्त निराशा के साथ जब अंतिम बार दयानन्द ने इधर-उधर देखा तो दो मनुष्य आते दिखाई दिए। उन्होंने पास आकर नमस्कार किया और घर चलने का अनुरोध करते हुए भोजन-व्यवस्था का भी विश्वास दिलाया। पर, दयानन्द में तो इस समय चलने का तनिक भी सामर्थ्य नहीं था। इसलिए उन्होंने उन दोनों का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। उनके अत्यन्त आग्रह पर भी स्वामी जी ने कहा, मुझे यहीं पर मर जाना स्वीकार है पर मैं यहाँ से अन्यत्र कहीं जा नहीं सकता। इसी समय उनके हृदय में एक प्रकाश हुआ और आत्मा में एक ध्वनि प्रकट हुई। स्वामी जी के अपने शब्दों में-मैंने सोचा, यह क्या है? मैं मरने की बात क्यों करता हूँ। क्या ज्ञानानुशीलन द्वारा मोक्ष मार्ग का यात्री बन इस जीवन को पूर्ण करना मेरे लिए श्रेष्ठ कर्त्तव्य नहीं है? इस प्रकार चिन्तन से उनकी आत्मा में ऐसा बल आया कि वे खड़े होकर धीमे-धीमे चलने लगे और रात को 8 बजे बद्री नारायण के मन्दिर में पहुंच गए।

यहाँ से चलकर रामपुर, चिल्किया घाटी, काशीपुर, द्रोण सागर स्थानों पर कई योगियों से मिलते हुए और सम्वत् 1912 का शीत इन्हीं पर्वतों पर बिताते हुए स्वामी जी द्रोण सागर से मुरादाबाद पहुंचे। इस यात्रा में उनके हृदय में हिमालय के हिम भाग में जाकर देह त्याग का विचार तो एक क्षण के लिए आया पर दूसरे ही क्षण ज्ञान संचय द्वारा मोक्षप्रद प्राप्ति की भावना जागृत हो उठी।

शवच्छेदः रीछ का मुकाबला

मुरादाबाद से संभल होते हुए गढ़मुक्तेश्वर पहुंचे। इस समय उनके पास हठयोग प्रदीपिका, योग बीज इत्यादि ऐसी कई पुस्तकें थीं जिनमें नाड़ी चक्र का वर्णन था। गंगा में एक दिन एक शव को बहते देख उनके हृदय में इन पुस्तकों में वर्णित नाड़ी चक्र की सत्यता जानने की उत्सुकता हुई। एक बड़ी छुरी से शवच्छेद करके आभ्यन्तरिक अंगों की तुलना जब इन पुस्तकों से की तब सर्वथा मिथ्या वर्णन देख शव के साथ इन पुस्तकों को भी गंगा में प्रवाहित कर दिया। सम्वत् 1912 के अन्त तक कानपुर, इलाहाबाद, मिर्जापुर होते हुए काशी पहुंचे और वहां एक मास रहे। यहां कुछ प्रमुख-प्रमुख पंडितों से आपका वार्तालाप होता रहा। काशी से चुनार होते हुए स्वामी जी नर्मदा के स्त्रोत की ओर चल पड़े। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि किसी व्यक्ति से भी मार्ग कि दिशा नहीं पूछेंगे। इसी प्रकार चलते-चलते वे एक अत्यन्त घने और संकीर्ण जंगल में पहुंच गए। यहाँ एक भयंकर काला रीछ उनके सामने पिछली टाँगों के बल खड़ा हो आक्रमण के लिए पहुंच गया। स्वामी जी ने धीरे-धीरे अपने हाथ की लाठी उसकी ओर उठाई। रीछ तत्काल भाग गया। स्वामी जी आत्मविश्वास और प्रभु-आस्था के सहारे आगे बढ़े। अब जंगल अत्यन्त बीहड़ और पूर्ण रूप से कंटीली झाड़ियों से भरा हुआ मिला। स्वामी जी घुटनों के बल रेंग-रेंगकर इसे पार करने लगे। पर इस कार्य में उनके वस्त्र धज्जी-धज्जी हो गए, शरीर से अनवरत रक्तधारा बहने लगी। एक ओर शरीर सर्वथा अवसन्न और दूसरी और सायंकाल के बाद जंगल में फैलता घोर अन्धकार, पर स्वामी जी प्रभु पर अटल निश्चय करके चलते ही गए। एक ओर छोटी-सी नदी देखी और उस पर चर रही बकरियों को देख उन्हें विश्वास हो गया कि यहाँ अवश्य आस पास कोई गांव है। स्वामी जी ने वहीं आसन लगा रात बिताने का निश्चय किया। उसी समय गाँव के स्त्री-पुरुष भक्तिभाव से महाराज के पास पहुंचे और गाँव में चल कर कुटिया में विश्राम करने का आग्रह किया। स्वामी जी ने इसे अस्वीकार कर दिया। तब वहीं दूध इत्यादि द्वारा उनका सत्कार किया गया। रात भर दो व्यक्ति महर्षि की रक्षा में तत्पर वहीं रहे। सम्वत् 1912 के अन्त तक उनकी यह यात्रा हुई।

1857 के स्वतन्त्रता युद्ध में सहयोग

इनके बाद सम्वत् 1913 से 3 वर्ष का विवरण नहीं मिलता। स्वामी जी की अपनी सुनायी हुई आत्म-कथा भी सम्वत् 1912 तक

समाप्त हो जाती है। यह तीन वर्ष का समय वही है जिसे भारत के इतिहास में 1857 का प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध कहा जाता है। नई खोज से ऐतिहासिकों ने सिद्ध किया कि ये तीन वर्ष स्वामी जी ने इस स्वतन्त्रता युद्ध में सक्रिय भाग लेकर व्यतीत किए। इतना तो स्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द सदृश, दूरदर्शी, राष्ट्रभक्त, भावना-प्रबल और चेतनाशील व्यक्ति भारत में विदेशियों के साथ चल रहे इस संघर्ष को मौन होकर देखता रहा हो, यह सम्भव नहीं है।

दण्डी विरजानन्द की शिष्यता

लगभग 13 वर्ष तक इस लम्बे भ्रमण काल में महर्षि ने देश की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक इत्यादि स्थिति का गहराई के साथ अध्ययन किया। उन्होंने निश्चय किया कि बिना अधिक और गम्भीर ज्ञान संचय के देश और विश्व में किसी प्रकार के सुधार और परिवर्तन के आन्दोलन नहीं चलाए जा सकते। फलतः महर्षि इस ज्ञान-संचय की प्रबल भावना से संवत् 1916-17 में मथुरा में दण्डी विरजानन्द स्वामी की सेवा में पहुंचे। यहां वे लगभग तीन वर्ष तक दण्डी जी से विद्या अध्ययन करते रहे। इस समय उनकी आयु लगभग 30 वर्ष की थी। गुरु-शिष्य के सम्बन्ध कितने गहरे और एक दूसरे के प्रति घनिष्ठता से बंधे थे-इसका वर्णन हम दंडी जी के जीवन चरित्र में कर चुके हैं। दण्डी जी यद्यपि स्वभाव से तीक्ष्ण, उग्र और निःस्पृह थे पर दयानन्द की एकान्तिक सेवा, निष्ठा और गुरु भक्ति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। उन्होंने समझ लिया कि दयानन्द एक सामान्य शिष्य नहीं है। शिष्य रूप में दयानन्द ने अपने गुरु चरणों के प्रति जिस प्रकार तपःपूत आस्था रखी और स्वयं को जिस प्रकार तपस्या और कष्टों की भट्टी में तपाया वह इस कलियुग में भारत प्राचीनकाल की सतोयुगी परम्पराओं का एक देदीप्यमान सजीव उदाहरण है। शिष्य को दिया गुरु श्री का आशीर्वाद भला कैसे विफल हो सकता था? दण्डी जी के आशीर्वाद के साथ उनकी चरण रज को अपने मस्तक पर रख दयानन्द अब कार्यक्षेत्र में प्रविष्ट हुआ, और एक प्रबल आत्मविश्वास और ज्ञान संचय के सम्बल से ऋषि रुप में अवतरित हुआ।

संशयग्रस्त मन

संवत् 1920 से संवत् 1923 तक ऋषि दयानन्द ने आगरे में प्रारम्भिक प्रचार कार्य किया। अभी तक दयानन्द संशयग्रस्त विचारों के थे। वे कभी मथुरा जाकर अथवा पत्र द्वारा भी गुरु जी से शंका समाधान करते रहते थे। स्वामी जी इन दिनों आगरा में गीता और योग वसिष्ठ की कथा करते। प्राणायाम, न्यौली आदि क्रियांए करते और कभी-कभी 18-18 घण्टों तक एक आसन पर समाधिस्थ होते थे। यहां उन्होंने एक भक्त की सहायता से सन्ध्या विधि की 30 हजार प्रतियाँ छपवाई। सिला हुआ कपड़ा नहीं पहनते थे और लोई व धुस्सा ओढ़ते, पगड़ी बाँधते और जूते पहनते थे।

शैव मत के प्रचारक

स्वामी जी का इस समय झुकाव शैव मत की ओर था भागवत का और वैष्णवों का खण्डन करते थे। शरीर पर भस्म रमाते और रुद्राक्ष की माला पहने थे। ग्वालियर, करौली, जयपुर, पुष्कर इत्यादि में उन्होंने वैष्णव पंडितों से शास्त्रार्थ कर और उन्हें पराजित कर शैव मत का खूब प्रचार किया। स्वामी जी के प्रचार से जनता ने कंठिया तोड़कर उनके ढेर लगा दिये। पुष्कर से अजमेर आए और यहाँ ईसाइयों से मुठभेड़ हुई। अजमेर में उन दिनों गवर्नर-जनरल के एजेंट का निवास स्थान था। स्वामी जी अब गौ-रक्षा के लिए भी आन्दोलन चला रहे थे। यहां अंग्रेज सरकारी अधिकारियों से उन्होंने गौ-वध रोकने के लिए कानून बनाने की मांग की। गवर्नर जरनल के एजेंट कर्नल ब्रुक से स्वामी जी ने विशेष रूप से गौ-वध रोकने की मांग की। कर्नल ने गवर्नर जनरल के नाम स्वामी जी को एक पत्र दिया जिसमें गौ-वध रोकने की पुष्टि की गई थी। अजमेर में स्वामी जी ने रामस्नेहियों का खण्डन किया। आगरा में आकर भागवत् खंडन पर एक पुस्तिका प्रकाशित कराई। आगरा से स्वामी जी मथुरा गये और अपने गुरु दंडी से भेंट की। यह उनकी अन्तिम भेंट थी। कई संशयों का निवारण किया। यहां से स्वामी जी सवत् 1923 को कुम्भ मेले से एक मास पूर्व हरिद्वार पहुंच गए।

कुम्भ मेले में पाखण्ड खण्डिनी पताका

दयानन्द की हरिद्वार कुम्भ मेले की यह दूसरी यात्रा थी। जब वह पहले आये थे, तब केवल एक सामान्य संन्यासी के रूप में अथवा जिज्ञासु और दर्शक के रूप में थे। अब दंडी विरजानन्द की शिक्षा से उन्मुक्त ज्ञान नेत्रों के साथ इस मेले में आए और सप्त सरोवर पर उन्होंने पाखंड खंडिनी पताका लगाकर मूर्ति पूजा तथा वैष्णव मत का खण्डन प्रारम्भ कर दिया। इससे सारे मेले में एक प्रकार की हलचल मच गई। जनता ऋषि के वचनों से प्रभावित हो रही थी। भागवत के खण्डन में स्वामी जी द्वारा लिखित पुस्तक की हजारों प्रतियां यहां बांटी गयीं। पर मेले में एकत्र गृहस्थों और साधुओं की दीन दशा देख महाराज का हृदय द्रवित हो गया। उन्होंने देखा कि इन तथाकथित साधु-सन्तों और संन्यासियों के चुंगल में फँसी भोली-भाली जनता किस प्रकार ठगी जा रही है। दयानन्द के हृदय में यह दृश्य देख प्रबल प्रतिक्रिया हुई। उन्होंने पाखण्ड के इस अभेद दुर्ग पर आक्रमण करने का निश्चय किया। गम्भीर चिन्तन के बाद उन्होंने सर्वमेध यज्ञ का संकल्प किया। जो कुछ उनके पास था वस्त्र, पुस्तक, धन-सब जनता के अर्पण कर केवल एक कौपीन धारी अपनी ही कुटिया से बाहर निकल पड़े और मौनव्रत धारण कर गंगा के किनारे बैठ ध्यानावस्थित हो ब्रह्म चिन्तन में निमग्न हो गए।

गंगातट विचरणः मूर्ति पूजा खण्डन

हरिद्वार से प्रारम्भ कर अढ़ाई वर्ष तक गंगातट विचरण करते रहे। इस अवधि में स्वामी जी का प्रधान कार्यक्रम एक और पाखंडों

का खण्डन और दूसरी ओर लोगों को सन्ध्या गायत्री सिखाने और कहीं-कहीं मनुस्मृति और उपनिषद् पढ़ाते, यज्ञ कराते और सब को यज्ञोपवीत देते थे। संस्कृत में ही प्राय: बोलते और एकमात्र कौपीन धारी तथा भस्म रमा कर रहते। अनूप शहर में पण्डितों ने अपनी पराजय स्वीकार कर मूर्तियाँ गंगा में बहा दीं और कंठियाँ तोड़ दी थी, जनता ने भी इन पण्डितों का अनुकरण किया, स्वामी जी के कुछ विरोधियों ने पान में विष मिलाकर उन्हें दे दिया। स्वामी जी के भक्त वहाँ के मुसलमान तहसीलदार सैय्यद मुहम्मद ने अपराधी को पकड़कर जेल में डाल कठोर दंड देने की इच्छा प्रकट की। ऋषि ने उत्तर दिया-मैं संसार को कैद कराने नहीं, वरन् कैद से छुड़ाने के लिए आया हूँ। लढौरा, मीरापुर (जि० मुजफ्फर नगर), बिजनौर, गढ़मुक्तेश्वर, फर्रूखाबाद, अनूपशहर (दोबारा), चांसी (जि० बुलन्दशहर), खेरा इत्यादि गंगा तटवर्ती स्थानों पर प्रचार किया। गायत्री और यज्ञोपवीत प्रचार के साथ-साथ प्रत्येक स्थान पर पौराणिक पण्डितों से शास्त्रार्थ भी होने पर पण्डित निरुत्तर हो जाते थे। गायत्री मंत्र की प्रति जिसे देते, उस पर 1000 बार जप करना आवश्यक है यह संकल्प लेते। कर्णवास में स्वामी जी ने धर्मपुर निवासी एक नव-मुस्लिम की शुद्धि भी की। बुलन्दशहर का अंग्रेज कलक्टर ऋषि का भक्त हो गया था और उनके दर्शन करने प्राय: आता था। स्वामी जी ने उसे न्यायपूर्वक प्रजा-पालन का उपदेश दिया। स्वामी जी की दिनचर्या में इन दिनों गंगातट पर कई घंटों के समाधिस्थ होने का दैनिक कार्यक्रम था। शीतकाल में भी वे वस्त्र नहीं पहनते, रात को केवल फूस अपने ऊपर डाल लेते और ईटों का तकिया करते थे। स्वामी जी कहा करते थे कि ब्रह्मचर्य ओर योगाभ्यास के कारण उन पर शीत-उष्ण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। गढिया घाट और सोरों में लगभग 3 मास विचरण करते रहे। यहां चक्राँकित सम्प्रदाय का जोर था और लगभग १० हजार ब्राह्मण रहते थे। स्वामी जी ने खूब खंडन किया और कई प्रमुख ब्राह्मण इनके शिष्य बन गए। स्वामी कैलाश पर्वत का सोरों में वराह मन्दिर था मूर्ति पूजा के खण्डन से इस स्वामी के मन्दिर को छोड़ दिया जिससे कैलाश पर्वत कुपित हो गए और ऋषि दयानन्द के प्रति अपशब्द कहने लगे। पर ऋषि ने किसी प्रकार कैलाश पर्वत का अपमान नहीं किया। कैलाश पर्वत विद्वान् थे। उनसे पहले आगरा और हरिद्वार कुम्भ मेले पर भेंट हुई थी। ऋषिवर कैलाश पर्वत का सदा मान करते थे। सोरों में लगभग तीन मास रह कर कासगंज, पीलीभीत, बरेली होते हुए कर्णवास पहुंचे। यहाँ दशहरे का स्नान पर्व था।

कर्णसिंह का ऋषि पर तलवार से हमला

कर्णवास के पास वरौली ग्राम का डा. कर्णसिंह भी यहाँ आया हुआ था। वह चक्रांकित सम्प्रदाय का था। एक दिन सभा में उपदेश देते समय वह झगड़ा करने आ गया। ऋषि ने रामलीला में स्वाँग बनाने और तिलक आदि चक्रांकित मत के चिन्हों का खण्डन किया। कर्णसिंह ने क्रुद्ध हो स्वामी जी पर तलवार से आक्रमण किया। उन्होंने तलवार छीन ली पृथ्वी पर टिकाकर उसे तोड़ दिया। भक्तों के आग्रह पर भी ऋषि ने थाने में रिपोर्ट नहीं लिखाई। कर्ण सिंह ने फिर दोबारा अपने तीन सेवकों को भेज रात को स्वामी जी पर आक्रमण करने का षड्यंत्र किया। कुटिया के द्वार पर जब वे घातक पहुंचे तो स्वामी जी की नींद खुल गई और उन्होंने जोर से हुंकार किया। तीनों डरकर भाग गए। प्रात: भक्तों ने कर्ण सिंह और उसके सेवकों को ललकारा। पर कोई सामने आने का साहस न कर सका। यहां से शहबागपुर, कादिरगंज, नरदौली, खौड़ा कायमगंज, कम्पिल, कासगंज पहुंचे और वहाँ भक्तों के अत्यन्त आग्रह पर संस्कृत पाठशाला स्थापित की। यहाँ से तीसरी बार फर्रूखाबाद पहुंचे। यहाँ स्वामी जी ने अनेक लोगों के यज्ञोपवीत कराये और पौराणिकों द्वारा मेरठ से विशेष रूप से बुलाए गए पं० श्री गोपाल शास्त्री से मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ किया।

कानपुर में शास्त्रार्थ

इस नगर में भी स्वामी जी महाराज ने संस्कृत पाठशाला स्थापित की। पं० श्री गोपाल जी की पराजय से यहां के पौराणिक खिन्न थे। प्रेमदास, देवीदास खत्री रईस की सलाह से कानपुर से पं० हलधर ओझा को वहां बुलाया गया। रात्रि के एक बजे तक शास्त्रार्थ चलता रहा। शास्त्रार्थ अगले दिन के लिए स्थगित हो गया। नगर की मंडली पर स्वामी की विद्या का गहरा प्रभाव पड़ा। ओझा जी व्याकरण और महाभाष्य के सामान्य प्रश्नों का भी उत्तर न दे सके। अन्त में वे सभा में मूर्च्छित हो गए और उन्हें किसी प्रकार घर ले जाया गया। फर्रूखाबाद से 19 मील रामपुर में एक रात ठहरते हुए कन्नौज पहुंचे और यहाँ पं० रविशंकर और पं० गुलजारीलाल से मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ हुआ। पण्डित हरिशंकर ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली। दोनों पण्डित स्वामी जी के कट्टर समर्थक हो गए। यहां स्वामी जी ने घोषणा की कि गायत्री मन्त्र सबके लिए एक समान है।

हलधर पण्डित की पराजय

कन्नौज में लगभग एक सप्ताह रह कर स्वामी जी कानपुर पधारे। नगर में हलचल मच गई। मूर्ति पूजा पर खूब प्रश्न-उत्तर होते। वहां पण्डित हलधर ओझा इनके साथ लक्ष्मण शास्त्री शास्त्रार्थ के लिए एक पौराणिक संन्यासी द्वारा खड़े किए गए। नगर के असिस्डेन्ट कलक्टर संस्कृतज्ञ थेन साहब मध्यस्थ बने। नगर के अनेक उच्च पदाधिकारी तथा प्रमुख महानुभाव उपस्थित थे। लग-भग 20-25 हजार लोग वहाँ सुनने के लिए एकत्र थे। ओझा ने पहले तो स्वामी जी के सामने व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों की चर्चा की। महाराज के यह कहने पर कि यह स्थान महत्त्वपूर्ण शास्त्रार्थ का है, इन शंकाओं का उत्तर आप मुझ से मेरी कुटिया पर आकर ले लेना, हलधर ने महाभारत की एकलव्य और द्रोण की कथा द्वारा मूर्ति-पूजा की सार्थकता बताई। स्वामी के यह कहने पर कि एकलव्य तो

अज्ञानी था और उसे लाभ मूर्ति-पूजा से नहीं, किन्तु अभ्यास वश हुआ है। तब वह अप्रासंगिक चर्चा करने लगा। इस पर थेन साहब कुर्सी से उठ खड़े हुए और जनता भी तितर-बितर हो गई। हलधर ओझा की फिर करारी हार हुई। थेन साहब ने एक विज्ञापन प्रकाशित कर स्वामी जी को विजयी घोषित किया। अब लोग मूर्तियाँ फैंकने लगे। इस पर ओझा ने जनता से अनुरोध किया कि मूर्तियों को फैंकने की अपेक्षा कैलाश-मन्दिर में पहुंचा दें। महाराज तीन मास तक कानपुर रहे।

काशी में शास्त्रार्थ

यहाँ से विचरण करते हुए स्वामी जी महाराज पाखण्ड के दुर्भेद्य किले कांशी पहुंचे। काशी नरेश ने उन्हें संदेश भेजा कि अगर वे मूर्ति पूजा का खण्डन छोड़ दें तो राज्य की ओर से 100 रु० की मासिक वृत्ति मिलती रहेगी। महर्षि का उत्तर था कि यदि महाराजा सारा राज्य भी दे दें तब भी मूर्ति-पूजा का खण्डन नहीं छोडूँगा। महाराज चिढ़ गए और उनकी प्रबल इच्छा हुई कि स्वामी को किसी प्रकार शास्त्रार्थ में हराया जाए। ऋषि ने काशी नरेश की हस्तिशाला के समीप एक वृक्ष के नीचे आसन लगाया था अब सारे नगर में हलचल मच गई। लोग रामनगर में ऋषि के दर्शनों और शंका समाधान के लिए उमड़ पड़े। काशी नरेश द्वारा पण्डितों को प्रेरणा देकर शास्त्रार्थ के लिए तैयार किया गया। पंडित गण अभी तक टालते रहे थे और स्वामी जी के प्रति हीन वचन कहकर ही आत्मसंतुष्टि कर रहे थे। अन्तत: उन्हें शास्त्रार्थ के लिए राजी होना पड़ा और कार्तिक शुक्ला 12, संवत् 1926 (16 नवम्बर, 1869), मंगलवार का दिन शास्त्रार्थ के लिए निश्चय किया गया।

स्वामी जी के शिष्य ब्रह्मचारी बलदेव ने गुण्डों के उत्पात की निश्चित आशंका प्रकट की। महर्षि मुस्कराते हुए बोले-योगीजनों का निश्चिय सिद्धान्त है कि सत्य का सूर्य गहनतम अंधकार पर एकाकी विजय पा लेता है। जो ईश्वरानुकूल उपदेश करता है, उसे भय कहां? काशी में स्वामी जी राजा माधोसिंह के बाग में ठहरे और यहीं शास्त्रार्थ का स्थान निश्चित किया गया।

काशी के पण्डितों का छल कपट

सरकार की ओर से शान्ति-व्यवस्था का प्रबन्ध किया गया। 50 हजार लोगों की भीड़ की सम्भावना थी। बाग के दालान की खिड़की में महर्षि का आसन लगाया गया और उनके सामने प्रतिपक्षी पण्डित का। एक तीसरा आसन काशी नरेश के लिए था। काशी नरेश और पण्डितों ने पहले ही अव्यवस्था प्रारम्भ कर दी। सबसे पहले पण्डित ताराचरण नैयायिक ने स्वामी जी के इस प्रश्न पर की वेद में पाषाण पूजा का प्रमाण दें-कहा कि हम केवल वेद को ही प्रमाण नहीं मानते इस पर विशुद्धानन्द स्वामी बीच में ही व्यास के एक सूत्र को बोल उठे और उसका अर्थ पूछा। स्वामी जी के कहने पर कि यह आज के प्रकरण से बाहर है, विशुद्धानन्द के आग्रह पर महर्षि ने कहा कि पूर्वा-पर प्रकरण देखकर ही उसका समाधान किया जा सकता है। विशुद्धानन्द जी उलाहना देते हुए बोले, अगर समग्र कंठस्थ नहीं था तो काशी में शास्त्रार्थ करने क्यों आये? ऋषि ने कहा कि क्या आपको सब कठांग्र है? विशुद्धानन्द जी के हां कहने पर ऋषि ने पूछा कि धर्म के कितने लक्षण हैं? विशुद्धानन्द जी से इसका उत्तर न बन पड़ा और स्वामी के आग्रह पर वे कोई प्रमाण भी न दे सके। विशुद्धानन्द जी के निरुत्तर होने पर पं० बालशास्त्री ने अपना बनाया हुआ जब श्लोक पढ़ा और स्वामी जी ने उसे अप्रामाणिक ठहराया तब शिवसहाय पण्डित ने मनुस्मृति का धृति-क्षमा श्लोक पढ़ा। ऋषि के इस प्रश्न पर कि अधर्म का लक्षण कहें, वे निरुत्तर हो पीछे हट गए। इस प्रकार पं० वर्ग के महारथियों को उखड़ते देख अन्य पण्डित एक स्वर में चिल्लाकर पूछने लगे, वेद में प्रतिमा शब्द है या नहीं? ऋषि ने इस उत्तर पर कि वेद में प्रतिमा शब्द तो है (स्वामी जी ने कहा हां और यजुर्वेद और सामवेद के अध्याय और मन्त्र का प्रमाण दिया) पर वह पाषाण आदि की प्रतिमा के पूजन से सम्बद्ध नहीं है। ये उच्छृंखल पण्डित तो चुप हो गए पर बालशास्त्री और विशुद्धानन्द को अब तक विश्राम मिल गया। इसलिए अब दोनों प्रश्न करने लगे। विशुद्धानन्द के प्रश्न वेद के सम्बन्ध में थे। जब वे चुप हो गए तब माधवाचार्य भिड़ गए। एक मंत्र में आए पूत शब्द का अर्थ पूछने और जानने के बाद निरुक्तर हो बोले, वेदों में पुराण शब्द आया है कि नहीं? ऋषि द्वारा इस प्रश्न के उत्तर में यह कहने पर कि पुराण शब्द वेदों में आया है पर उसका अर्थ 18 पुराण नहीं, किन्तु सनातन है। इस समय विशुद्धानन्द और बाल शास्त्री फिर पुराण शब्द पर शंका करने लगे। स्वामी जी द्वारा भगवद्गीता और छान्दोग्य उपनिषद् के प्रमाणों द्वारा पुराण की व्याख्या करने के बाद सब पं० मंडली चुप हो गई और सभा में सन्नाटा छा गया। अब ऋषि दयानन्द ने पण्डितों को ललकार कर संस्कृत व्याकरण में कलम संज्ञा की उत्पत्ति कैसे हुई। यह प्रश्न पूछा; पर कोई पंडित इस शंका का समुचित उत्तर न दे सका। मध्याह्न 3 बजे से सायं 7 बजे तक शास्त्रार्थ होता रहा और अकेले अभिमन्यु पर कौरव दल द्वारा धूर्तता से किए गए सम्मिलित आक्रमण की तरह अब सारी पंडित मण्डली ने अकेले ऋषि दयानन्द के साथ छल-कपट का व्यवहार किया। शाम को सूर्यास्त के कारण अंधेरा हो रहा था। पं० वामनाचार्य ने पुराने, फटे अस्पष्ट, दो पन्ने आगे बढ़ाते हुए कहा कि ये वेद के पन्ने हैं। इनमें यज्ञ की समाप्ति पर 10वें दिन पुराण-श्रवण के लिए कहा गया है। स्वामी जी के यह कहने पर कि आप पढ़कर सुनाइए विशुद्धानन्द ने स्वामी जी से ही पढ़ने का यह कहकर आग्रह किया कि वे बिना ऐनक के पढ़ नहीं सकते, तब ऋषि दयानन्द पन्ने हाथ में ले धुंधले प्रकाश में पुस्तक का नाम, वेद का नाम, अध्याय, मन्त्र आदि आदि प्रमाण देखने का जब प्रयत्न करने लगे, तब विशुद्धानन्द यह कहकर उठ खड़े हुए कि पूजा में देर होती है और

साथ ही शोर मचा दिया कि दयानन्द पराजित। ऋषिवर ने विशुद्धानन्द जी का हाथ पकड़कर बैठ जाने का बहुत आग्रह किया पर वह तो पूर्वनियोजित कूटनीति का गहरा दाव था। विशुद्धानन्द अब क्यों बैठते?

पूर्वनियोजित गुण्डों की शरारत

50 हजार की भारी भीड़ में हलचल मच गया। दयानन्द हार गया इस कर्णभेदी कोलाहल के अतिरिक्त महर्षि पर चारों ओर से ईंट, पत्थर, कंकड़, ढेले, गोबर और जूतों की वर्षा शुरू हो गई। कोतवाल ने महर्षि को खिड़की के भीतर बन्द कर किवाड़ बन्द कर दिये और उपद्रवियों को सिपाहियों ने संभाल लिया। अगर पुलिस की सहायता इस अवसर पर न मिलती तो निश्चय ही ऋषि का जीवन संकट में था।

काशी के मुसलमानों की शरारत

महर्षि इस सारी विकट, अन्याय तथा हिंसापूर्ण परिस्थिति में भी अविचल, शान्त और निर्द्वन्द्व रहे। उन्होंने अपने एक शिष्य से इतना अवश्य कहा-बड़ी आशा थी कि इतने विद्वानों के एकत्र होने पर शास्त्रार्थ न्यायपूर्वक होगा और कई दिन तक चलने वाला होगा पर काशी के पण्डितों ने कुछ घण्टों में ही बड़े अन्याय के साथ इसे हुल्लड़ में ही समाप्त कर दिया। शास्त्रार्थ के एक मास पश्चात् तक महाराज काशी में ही रहे। ऋषि ने काशी-शास्त्रार्थ नाम से पुस्तक का सारा वृतान्त टिप्पणी सहित छापकर बंटवा दिया। काशी में कोई पंडित इस एक मास में ऋषि के सम्मुख नहीं आया। काशी से कुछ मुसलमानों ने ऋषि द्वारा इस्लाम के खंडन से चिढ़कर उन्हें गंगा में फैंकने का प्रयत्न किया, पर बलशाली स्वामी जी उनमें से दो मुख्य व्यक्तियों को बगल में दबाकर गंगा में छलांग मार कर स्वयं पार चले गए। उन दोनों को गंगा में गोते खाने के लिए छोड़ दिया। एक व्यक्ति महाराज को विष वाला पान देकर भाग गया। स्वामी जी ने पान खोलकर देखा तो उसमें विष मिला हुआ था।

मिर्जापुर में वैदिक पाठशाला की स्थापना

काशी में मिर्जापुर होते हुए स्वामी जी प्रयाग कुम्भ के मेले में पहुंचे। यहां आदि ब्रह्मसमाज के संस्थापक महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर (विश्व कवि डा० रविन्द्रनाथ ठाकुर के पिता) से उनकी भेंट हुई और देर तक वार्तालाप होता रहा। यहाँ ठाकुर महादेव से ऋषि ने वैदिक पाठशाला नाम की एक संस्था खोलने का विचार-विनमय किया। ऋषि के पुनीत दर्शन से नगर के एक प्रमुख बंगाली ब्राह्मण सरकारी ओवरसीयर माधवचन्द्र चक्रवर्ती, जिनका झुकाव इस्लाम की ओर हो गया था, और जो मद्य-मांस, वैश्यागमन इत्यादि के कारण आचारहीन हो गए थे पर तीक्ष्ण-बुद्धि और सुपठित थे के जीवन की काया पलट हो गयी और यह कट्टर ईश्वर भक्त तथा संध्या-हवन जाप का पालन करने लगे। प्रयाग से पुनः मिर्जापुर आए यहां स्वामी जी ने वैदिक पाठशाला स्थापित की जिसका सारा व्यय चौधरी गुरचरण रईस ने देना स्वीकार किया। पहले ३०-३५ छात्र प्रविष्ठ हुए प्रत्येक छात्र के लिए संध्या अग्निहोत्र और गायत्री जाप अनिवार्य था। मिर्जापुर से पुनः काशी आकर महर्षि ने मूर्ति-पूजा का खण्डन किया और वहाँ के पंडितों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा शंकर के नवीन देहान्त के खंडन में महर्षि ने अद्वैतमत-खंडन नामक पुस्तक प्रकाशित की।

ब्राह्मण द्वारा पान में विष

वहाँ से स्वामी जी सोरों, कासगंज और अनूपशहर आये यहाँ एक ब्राह्मण ने स्वामी जी को पान में विष दे दिया। यहां के तहसीलदार और ऋषि के भक्त सैयद मुहम्मद ने उस ब्राह्मण को कैद में डाल दिया और अपनी ऋषि-भक्ति प्रकट करने के लिए उनसे सारा वृतान्त कहा। ऋषि ने अप्रसन्न होते हुए कहा, मैं संसार को कैद कराने नहीं किन्तु कैद से छुड़ाने आया हूं तहसीलदार ने तत्काल बन्दी को छोड़ दिया। यहां से चल रामगढ़ और जलेसर पधारे। यहां भी पाठशाला की स्थापना की गई। हवन के पश्चात् ब्रह्मभोज हुआ। यहां के ठाकुर मुकन्दसिंह और प्रभातसिंह इतने कट्टर ऋषि भक्त बन गए कि बिना उनके दर्शन के भोजन नहीं करते थे। वर्षा होते हुए भी और भक्तों के आग्रह में न फंसते हुए महर्षि जलेसर से चल गंगा तटस्थ स्थानों का दौरा करते हुए रामघाट और फर्रुखाबाद और पुनः काशी पहुंचे। कोई ललकारने पर भी शास्त्रार्थ के लिए सामने नहीं आया स्वामी जी महाराज को भविष्य का ज्ञान भी हो जाता था। एक बार यहां उपदेश देते हुए उन्होंने कहा कि अभी कुछ देर में एक कौतूहल जनक घटना होने वाली है। इतने में एक ब्राह्मण भोजन और पान लेकर आया और महाराज को भेंट करने लगा। स्वामी जी ने भोजन तो अस्वीकार कर दिया पर पान ले लिया। दोनों को खोलकर देखा तो उसमें विष था। ब्राह्मण भाग चुका था।

कलकत्ता-यात्राः ब्रह्मसमाज से सम्पर्क

गंगा-तटवर्ती विभिन्न नगरों, कस्बों और ग्रामों की यात्रा तथा काशी की तीन-चार यात्रा करने के पश्चात् महर्षि मुगलसराय, डुमरांब आए। पटना, मुंगेर, भागलपुर होते हुए कलकत्ता पहुंचे और सम्पर्क प्रायः उन लोगों से रहा जो कट्टरपन्थी पण्डित वर्ग अथवा सामान्य स्थिति के व्यक्ति थे। कलकत्ता उस समय भारत की राजधानी और आधुनिकता का केन्द्र थी। यहां आकर महर्षि का सम्पर्क उन लोगों से हुआ जो आधुनिक विचारधारा में प्रमुख चिन्तनशील और पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित नवीन समाज के अग्रणी थे। इस समय बंगाल में, और विशेषतः कलकत्ता में ब्रह्मसमाज का जोर था। इस ब्रह्मसमाज के एक दल की स्थापना बा० केशवचन्द्र सेन ने की थी। इसका झुकाव अधिकतः ईसाई मत की ओर था। इस नई ब्रह्मसमाज का नाम नवविधान समाज था। ब्रह्मसमाज वेद को ईश्वरीय ज्ञान और आवागमन के सिद्धान्त को नहीं मानता था। ब्रह्मसमाज के एक प्रमुख कार्यकर्त्ता पं० हेमचन्द्र स्वामी जी के अनुयायी बन गए और

इन्होंने महाराज से अष्टांग योग की विधि सीखी। उपनिषदों का अध्ययन किया और फर्रुखाबाद में यह पाठ समाप्त हुआ।

वस्त्र धारण और हिन्दी में भाषण

कलकत्ता में पहला व्याख्यान बा० केशवचन्द्र सेन के मकान पर हुआ फिर ब्रह्मसमाज के उत्सव में, जो श्री देवेन्द्रनाथ ठाकुर के गृह पर, व्याख्यान हुआ। इसके बाद कलकत्ता के विभिन्न स्थानों पर कई व्याख्यान व उपदेश हुए। यहाँ केशव बाबू की प्रेरणा से महर्षि ने वस्त्र-धारण और हिन्दी में व्याख्यान देना प्रारम्भ किया। कलकत्ता के पास हुगली में पं० ताराचरण तर्करत्न से प्रतिमा-पूजन पर शास्त्रार्थ हुआ। शास्त्रार्थ में अपनी हार होते देख पण्डित जी ने यह कहकर पीछा छुड़ाया कि मूर्ति-पूजा मिथ्या तो है पर उदर पूर्ति के लिए इसका समर्थन करना आवश्यक है। कलकत्ता से वापसी पर ऋषि वर्धमान ठहरते हुए भागलपुर और वहाँ से छपरा आए। यहां पण्डित जगन्नाथ को शास्त्रार्थ के लिए तैयार किया गया। उसने इस शर्त पर माना कि नास्तिक का मुंह नहीं देखूंगा। तब पर्दे की ओट में पंडित जगन्नाथ ने बैठकर अनर्गल भाषण देना प्रारम्भ किया। हुल्लड़पन के साथ सभा समाप्त हुई। छपरा से आरा, डुमराँव, और मिर्जापुर पहुंचे। यहां की पाठशाला की दुरावस्था को देख उसे तोड़ दिया। स्वामी जी ने काशी में आकर सत्यशास्त्र पाठशाला के नाम से विद्यालय स्थापित किया। पं० शिवकुमार शास्त्री जी बाद में काशी के दिग्गज पंडित प्रसिद्ध हुए, पाठशाला में 15 रु० मासिक पर अध्यापक नियुक्त हुए।

10 अप्रैल 1875 को आर्य समाज की स्थापना

स्वामी जी बम्बई वापस आये। अब नियमित रूप से चैत्र शुक्ला 5, शनिवार संवत् 1932, तदनुसार 10 अप्रैल 1875 को गिरगाँव रोड स्थित डा० माणिक जी की बागबाड़ी में सायं 5:30 बजे आर्यसमाज की स्थापना हुई। इस समय का समय पहले शनिवार सायंकाल बाद में परिवार का निश्चित किया गया। सभासदों ने महर्षि को समाज का अधिनायक अथवा सभापति बनाने का प्रस्ताव किया, पर महर्षि ने अत्यन्त दूरदर्शिता से इसे सर्वथा अस्वीकार कर दिया।

बम्बई में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना के समय निम्न 28 नियम स्वीकृत हुए थे-

1. सब मनुष्यों के हितार्थ आर्यसमाज का होना आवश्यक है। (2) इस समाज में मुख्यत: स्वत: प्रमाण वेदों को ही माना जाएगा। साक्षी के लिए, वेदों के ज्ञान के लिए और इतिहास के लिए शतपथादि चार ब्राह्मण, छ: वेदाँग, चार उपवेद, छ: दर्शन और 1127 वेदों की व्याख्या रूप शाखाएँ-इन आर्ष ग्रंथों को वेदानुकूल होने से गौण प्रमाण माना जाएगा। (3) इस समाज में प्रति देश के मध्य एक प्रधान समाज होगा, दूसरे शाखा प्रतिशाखा समझे जायेंगे। (4) सब समाजों की व्यवस्था प्रधान समाज के अनुकूल होगी। (5) प्रधान समाज में सत्योपदेश के लिए संस्कृत और आर्य भाषा से नाना प्रकार के ग्रंथ रहेंगे और एक साप्ताहिक पत्र आर्यप्रकाश निकलेगा। ये सब समाजों में प्रवृत किये जायेंगे। (6) प्रत्येक समाज में एक प्रधान पुरुष, दूसरा मंत्री तथा पुरुष और स्त्री सब सभासद् होंगे। (7) प्रधान पुरुष इस समाज की व्यवस्था का यथावत् पालन करेगा और मंत्री सबके उत्तर तथा सबके नाम की लेख व्यवस्था करेगा। (8) इस समाज में सत्यपुरुष, सदाचारी और परोपकारी सभासद् बनाये जायेंगे। (9) प्रत्येक गृहस्थ सभासद् को उचित है कि वह गृहस्थ से अवकाश पाकर, जैसे घर के कामों में पुरुषार्थ करता है, उससे अधिक पुरुषार्थ इस समाज की उन्नति के लिये कर और विरक्त हो समाजोन्नति ही में नित्य तत्पर रहे। (10) प्रत्येक सप्ताह में एक दिन प्रधान, मंत्री और सभासद समाज स्थान में एकत्रित हों और सब कामों से इस काम को मुख्य समझें। (11) एकत्र होकर सर्वथा स्थिर-चित हो, पक्षपात छोड़कर परस्पर प्रीति से प्रश्नोत्तर करें, फिर सामवेद गान, परमेश्वर, सत्य, धर्म, सत्यनीति सत्योपदेश के विषय ही में बाजे आदि से गान, और इन्हीं विषयों पर मंत्रों का अर्थ, और व्याख्यान हो फिर गान फिर मंत्रों का अर्थ, फिर गान आदि। (12) प्रत्येक सभासद् न्यायपूर्वक पुरुषार्थ से जितना धन प्राप्त करें, उसमें से शताँश आर्यसमाज, आर्य विद्यालय और आर्य प्रकाश पत्र के प्रचार और उन्नति के लिए आर्य समाज के कोष में देवें। (13) जो मनुष्य इन कामों को उन्नति और प्रचार के लिए जितना-जितना प्रयत्न करे उसका उतना ही अधिक सत्कार, उत्साह वृद्धि के लिए होना चाहिये (14) इस समाज में वेदोक्त प्रकाश के अद्वैत परमेश्वर ही की स्तुति प्रार्थना और उपासना की जाएगी। स्तुति-निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, अजन्मा, अनादि, अनुपम, दयालु, सर्वाधार और सच्चिदानन्द आदि विशेषण से परमात्मा का गुण कीर्तन करना, प्रार्थना-सब श्रेष्ठ कामों में उससे सहायता चाहना, उपासना-उसके आनन्दस्वरूप में मगन हो जाना। सो पूर्वोक्त लक्षणयुक्त परमात्मा ही की भक्ति करनी चाहिये, उसको छोड़ अन्य किसी का आश्रय नहीं लेना चाहिये। (15) इस समाज में निषेकादि अन्त्येष्टि-पर्यन्त संस्कार वेदोक्त किये जाएँगे। (16) आर्य विद्यालय में वेदादि सनातन आर्य ग्रन्थों का पठन-पाठन हुआ करेगा और सब स्त्री-पुरुषों को वेदोक्त रीति से ही शिक्षा दी जाएगी। (17) इस समाज में स्वदेश के हितार्थ दो प्रकार की शुद्धि के लिए प्रयत्न किया जाएगा-एक परमार्थ, दूसरे व्यवहार। इन दोनों का शोधन तथा समस्त संसार के हित की उन्नति की जाएगी। (18) इस समाज में न्याय, पक्षपात से रहित प्रत्यक्षादि प्रमाणों से यथावत् परीक्षित सत्य धर्म, वेदोक्त ही माना जाएगा, इससे विपरीत कदापि नहीं। (19) इस समाज की ओर से श्रेष्ठ विद्वान् लोग सदुपदेश करने के लिए समयानुकूल सर्वत्र भेजे जायेंगे। (20) स्त्री और पुरुष-दोनों में विद्याभ्यास के लिए यथासम्भव प्रत्येक स्थान में आर्य विद्यालय पृथक-पृथक बनाए जाएँगे। स्त्रियों

की पाठशाला में अध्यापिका आदि का सब प्रबन्ध स्त्रियों द्वारा ही किया जाएगा और पुरुषों की पाठशाला में पुरुषों द्वारा, इसके विरुद्ध नहीं। (21) इन पाठशालाओं की व्यवस्था प्रधान आर्य समाज के अनुकूल पालन की जाएगी। (22) इस समाज में प्रधान आदि सब सभासदों को परस्पर प्रीतिपूर्वक, अभिमान, हठ, दुराग्रह और क्रोधादि दुर्गुणों को छोड़कर उपकार और सुहृद्भाव से निर्वैर होकर स्वात्मवत् सबके साथ बर्तना चाहिए (23) विचार के समय सब व्यवहार में जो न्याययुक्त, सर्वहित-साधक, सत्य बात मानी जाए। (24) जो मनुष्य इन नियमों के अनुकूल आचरण करने वाला, धर्मात्मा, सदाचारी हो, उसको उत्तम सभासदों में प्रविष्ट करना, इसके विपरीत को साधारण समाज में रखना और अत्यन्त प्रत्यक्ष दुष्ट को समाज से निकाल ही देना। परन्तु यह काम पक्षपात से नहीं करना, किन्तु ये दोनों कार्य श्रेष्ठ सभासदों के विचार से ही किए जाएं, अन्यथा नहीं। (25) आर्य-समाज, आर्य विद्यालय, आर्य प्रकाश पत्र और आर्यसमाज का कोष इन चारों की रक्षा और उन्नति प्रधानादि सब सभासद् तन, मन, धन से सदा किया करें। (26) जब तक नौकरी करने और कराने वाला आर्यसमाजस्थ मिले तब तक और की नौकरी न करे और न किसी अन्य को नौकर रखे। दोनों परस्पर स्वामी-सेवक भाव से यथावत् बर्तें। (27) जब विवाह, जन्म, मरण अथवा अन्य कोई दान करने का अवसर उपस्थित हो, तब तब आर्य समाज के निमित्त धन आदि दान किया करें। ऐसा धर्म का काम कोई दूसरा नहीं है, ऐसे समझ करें इसको कभी न भूलें। (28) इन नियमों में से यदि कोई नियम घटाया-बढ़ाया जाएगा तो सर्वश्रेष्ठ सभासदों के विचार ही से सबको विदित करके ऐसा करना होगा।

पंजाब की यात्रा

लाहौर में पौराणिकों का विरोध, मुसलमान की कोठरी में प्रचार

दिल्ली-दरबार के अवसर पर पंजाब के कुछ प्रमुख व्यक्तियों के निमंत्रण के फलस्वरूप स्वामी जी के चाँदपुर से सहारनपुर जा कुछ दिन विश्राम कर वैशाख कृष्णा 5, वि. सम्वत् 1934 (31 मार्च 1877) को पंजाब को वीरभूमि में पदार्पण किया। सबसे पहले आप लुधियाना पहुंचे, यहां 19 दिन रहे। पंजाब के तत्कालीन प्रमुख सुधारक मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी ने आपका भक्तिभाव से स्वागत किया। व्याख्यान और सार्वजनिक रूप से शंका समाधान के पश्चात् 19 अप्रैल को पंजाब की राजधानी लाहौर पहुंचे। ब्रह्मसमाज और संतसभा के सदस्यों ने स्टेशन पर स्वागत किया और ब्रह्मसमाजियों ने ही अतिथि की व्यवस्था की। बावली साहब में व्याख्यान होने लगे। पौराणिक दल में खलबली मच गई। कुछ पण्डितों ने स्वामी जी के आक्षेप का उत्तर देने का प्रयास किया पर उसका कुछ प्रभाव न पड़ा। अब से लोग ओछे हथियारों पर उतर आए। स्वामी जी रतनचन्द दाढ़ी वाले के बाग में ठहराये गए थे। पौराणिकों ने दाढ़ी वाले के लड़के भगवानदास को बहका कर उस बाग से स्वामी जी को हटवा दिया ब्रह्मसमाजी भी किनारा कर चुके थे, क्योंकि वे स्वामी जी को अपने समाज के लिए प्रयोग करना चाहते थे। ब्रह्मसमाज के मन्दिर में ऋषि ने वेदों के ईश्वरीय ज्ञान और आवागमन के सिद्धाँत की पुष्टि में व्याख्यान दिये थे। और ब्रह्मसमाजी इन दोनों को ही नहीं मानते थे। वहाँ के प्रमुख पण्डित मनफूल ने स्वामी जी से कहा कि आप मूर्ति-पूजा का खण्डन छोड़ दे तो हिन्दू जनता और जम्मू कश्मीर के महाराज आपका पूरा साथ देंगे। ऋषि का एक ही उत्तर था कि मैं महाराजा और जनता को प्रसन्न करूं अथवा ईश्वरीय शिक्षा का पालन करूं? इस प्रकार लाहौर में स्वामी जी को जब कहीं ठहरने का स्थान नहीं मिला तब वहाँ के मुसलमान डाक्टर खान बहादुर रहीम खाँ ने अपनी कोठी के द्वार उनके लिए खोल दिए। यहाँ नियमपूर्वक व्याख्यान के और शंका समाधान के कार्यक्रम चलने लगे। स्वामी जी इस मुसलमान की कोठी पर भी इस्लाम और ईसाइयत का खण्डन निर्भय होकर करते रहे। महर्षि के यहाँ दो मास के प्रचार का परिणाम यह हुआ कि लोगों ने अपनी मूर्तियाँ रावी में बहा दीं। लाला बालकराम खत्री ने अपने ठाकुरों की चौकी बाजार में फैंक दी।

लाहौर में आर्य समाज की स्थापना

लाहौर की शिक्षित जनता ऋषि के पवित्र जीवन और व्याख्यानों से बड़ी प्रभावित हुई। फलत: ज्येष्ठ शुक्ल 13, सम्वत् 1934 (24 जून 1877 को डाक्टर रहीम की कोठी पर आर्यसमाज की विधिवत् स्थापना ईश्वरोपासना और यज्ञ के पश्चात् हुई। बम्बई में आर्यसमाज के जो 28 नियम बनाये गये थे, अनुभव के आधार पर महर्षि ने उनमें परिवर्तन किया उद्देश्य और मन्तव्यों को पृथक कर नियमों को संशोधित रूप दिया गया। उपनियमों को पृथक् रूप में वर्गीकृत किया गया लाहौर में आर्यसमाज की स्थापना के साथ 10 नियम स्वीकृत किये गए जो आज तक सर्वमान्य चले आ रहे है। ये निम्नलिखित हैं:-

आर्यसमाज के 10 नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

वेद सम्बन्धी तीसरे नियम पर ब्रह्म समाजियों ने महर्षि से कहा कि यदि यह न रहे तो वे भी आर्य समाज में सम्मिलित हो सकते हैं। फिर राय मूलराज ने इसी तीसरे नियम में से सत्य शब्द निकालने का प्रस्ताव किया। पर महर्षि सिद्धांतों के साथ समझौता करने को किसी भी अवस्था में तैयार नहीं थे।

आर्य समाज लाहौर का दूसरा अधिवेशन। जुलाई को सत्सभा के स्थान पर हुआ पर पुराणों का खण्डन इस सभा में अनेक सदस्यों को सहन न हुआ इस सभा ने अपना स्थान आर्य समाज को देने से इन्कार कर दिया। अत: ३० रुपये मासिक पर अनारकली में एक किराये का मकान ले लिया गया। सभासदों की संख्या शीघ्र ही १०० से ३०० तक हो गयी। यहाँ महर्षि पंजाब के गवर्नर से वेदभाष्य की सहायतार्थ मिले। सरकार ने जिन पंडितों से ऋषि के वेदभाष्य पर सम्मतियाँ मांगी, वे सब पौराणिक थे, उनका विरोध स्वाभाविक था। इसलिये सरकारी सहायता न मिल सकी।

श्याम जी कृष्ण वर्मा को इग्लैंड भिजवाया

पंजाब में रहते हुये बम्बई आर्य समाज के प्रधान और वेद-भाष्य के प्रबन्धक श्री हरिश्चन्द्र चिन्तामणि के पत्र द्वारा महर्षि का श्याम जी कृष्ण वर्मा से पत्र-व्यवहार हुआ। स्वामी जी ने वर्मा को प्रबल प्रेरणा दी कि वह इंग्लैंड अवश्य जायें और आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ें। इससे भारत का विदेशों से सम्बन्ध बढ़ेगा। श्याम जी अल्प आयु का होता हुआ भी संस्कृत का मेधावी छात्र था। आर्य समाज के सम्पर्क में आने से उनकी सिफारिश महर्षि ने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के संस्कृत अध्यापक डा० मोनियर विलियम्स से की। फलत: श्याम जी कृष्ण वर्मा इंग्लैंड चले गये।

ब्रह्मचर्य-शक्ति का परिचय

लाहौर से अमृतसर, लुधियाना, गुरुदासपुर, बटाला होते हुए महर्षि जालन्धर आये। यहाँ स० विक्रमसिंह के आग्रह पर महर्षि ने उनकी बग्घी को पीछे से बिना उन्हें बताये, पकड़ ली। कई चावुक मारने पर भी सब घोड़े आगे न बढ़े तब सरदार साहब ने पीछे देखा। महर्षि ने बग्घी पकड़ी हुई थी सरदार साहब को अब ब्रह्मचर्य के बल का परिचय मिला। जालन्धर से पुन: लाहौर, वहां से फीरोजपुर, रावलपिंडी, झेलम, गुजरात, बजीराबाद, मुलतान और फिर लाहौर आये जहाँ वे एक मास ठहरे, एक ईसाई और ईसाइयत का प्रचारक पं० खड्गसिंह महर्षि के दर्शन मात्र से प्रभावित हो वैदिक धर्म में आ गया और प्रचारक बन गया।

तीसरी बार कुम्भ मेले पर

पंजाब की यात्रा के बाद महर्षि उत्तर प्रदेश में पहले रुड़की पधारे। यहाँ स्वामी जी के इस्लाम-खंडन से मुसलमान घबरा गये। शास्त्रार्थ करना चाहते थे पर लिखित शास्त्रार्थ करना और नियमों का निर्णय करते हुए मुकर गये। अपना पक्ष कमजोर देख मजिस्ट्रेट से किसी बहाने निषेध आज्ञा ले आये। रुड़की से मेरठ, अलीगढ़, दिल्ली, पुष्कर, अजमेर, मसूदा नसीराबाद, जयपुर, रिवाड़ी होते हुये सम्वत् १८३६ के कुम्भ मेले पर हरिद्वार पहुंचे।

थियोसोफिकल सोसाइटी से सम्पर्क

वहाँ से देहरादून होते हुए मेरठ पहुंचे। यही थियोसोफिकल सोसाइटी के कर्माल अल्काट और मैडम ब्लेवेस्टकी मिले। उन्होंने विशेष अनुरोध कर अपनी सोसाइटी को आर्य समाज की शाखा बनाने की स्वीकृति महर्षि से ले ली। यहां से अलीगढ़, मुरादाबाद, बदायूँ होते हुए बरेली पहुंचे। यहीं मुंशीराम जी (बाद में स्वामी श्रद्धानन्द) का महर्षि से साक्षात्कार हुआ जिससे इस नास्तिक और मार्गभ्रष्ट युवक का जीवन एकदम बदल गया। मुंशीराम के पिता ला० नानकचन्द जी उन दिनों बरेली में कोतवाल थे ओर सरकार की ओर से स्वामी जी के सत्संगों में सुरक्षा के लिए उपस्थित होते थे। पिता की प्रेरणा से ही मुंशीराम भी महर्षि के उपदेशों में आने लगे थे। शाहजहांपुर, फर्रुखाबाद, प्रयाग, मिर्जापुर, दानापुर (पटना) और वहाँ से काशी पहुंचे। पौराणिक पंडितों ने मजिस्ट्रेट से मिलकर उनके व्याख्यानों पर रोक लगा दी। इस पर पत्रों में आन्दोलन हुआ आखिर यह प्रतिबन्ध हटा लिया। महर्षि के व्याख्यान प्रारम्भ हो गये। यहीं लक्ष्मीकुण्ड पर वैदिक यंत्रालय की स्थापना करके एक प्रकार से गृहस्थी की तरह लौकिक व्यवहार में फँस गये हैं। इस यंत्रालय के पहले मैनेजर मुंशी बखतावर सिंह की जालसाजी को देख महर्षि ने बड़े खेद से सेठ कालीचरण को एक पत्र में लिखा, यह मामला अदालत में अवश्य जायेगा। आप फिर हमको कोई दोष न देना क्योंकि हमने केवल परमार्थ और स्वदेशोन्नति के कारण अपने समाधि और ब्रह्मानन्द को छोड़कर यह कार्य ग्रहण किया है... जो तुम इसका प्रबन्ध न करोगे तो ऐसी लूटमार से हमारे पास से पुस्तकादि भी कोई लूट लेगा। फिर तो हम अपने समीप कुछ भी न रख सकेंगे और वेदभाष्य आदि सब काम छोड़ देंगे। केवल एक

लंगोटी लंगोटी लगा दयानन्द बनकर विचरेंगे।

जोधपुर में प्रचारः षड्यंत्र का बीज-वपन

३ जून से प्रतिदिन सायं ६ से ८ बजे तक महर्षि की उपदेश-माला प्रारम्भ हो गई। महर्षि अपने उपदेशों में क्षत्रियों के चरित्र-शोधन, राजधर्म, गोरक्षा की आवश्यकता तथा वेश्या-गमन इत्यादि दुर्व्यसनों के त्याग पर अधिक बल देते थे। एक दिन उन्होंने स्पष्ट कह दिया क्षत्रिय सिंह है और वेश्या कुतिया है। प्रकाशित पत्रों से ज्ञात होता है कि महर्षि राजा तथा राज्य कुटुम्ब के अन्य सरदारों की अपेक्षा वृति से ऊब गये थे। २६ जून को जोधपुर नरेश पहली बार स्वामी को भेंट देने आए। २५ रु० और ५ अशरफी भेंट कीं। लगभग दो घंटे तक वार्तालाप हुआ। जुलाई के अन्त में राजा के नाम महर्षि ने एक गुप्त पत्र भिजवाया जिसमें मद्यपान, वेश्यागमन आदि दोषों का संकेत किया गया था। प्रतीत होता है कि अब राजा ने स्वामी जी की सेवा में आना ही छोड़ दिया था।

८ सितम्बर को स्वामी जी ने एक दूसरा गुप्त पत्र राजा को भेजा जिसमें नन्हीं जान वेश्या के प्रेम को छोड़ने, राजकुमार की शिक्षा के लिए मुसलमान व ईसाई को न रखने, उसे देवनगरी, संस्कृत और आर्य ग्रंथ पढ़ाने, गणेशपुरी सरीखे ठगों और वेश्या आदि से परे रहने के उपदेश दिए गए थे। यह गणेशपुरी शाक्तमतानुयायी और नन्हीं वेश्या का गुरु था। रियासत में चक्रांकितों का जोर था। राज्य के प्रभावशाली मुस्लिम मुसाहिबा भय्या फैजुल्ला खाँ इस्लाम के खंड़न से बहुत क्षुब्ध हो गये थे। इस प्रकार जोधपुर में स्वामी जी के विरुद्ध षड़यंत्र के बीज पनप रहे थे।

वेश्या की डोली को राजा द्वारा कंधा

इसी बीच एक घटना हो गई जिससे विरोधियों के षड्यंत्र को बहुत बल मिल गया। राजा यशवन्त सिंह का नन्हीं जान वेश्या से गहरा सम्बन्ध था। एक दिन अपने निश्चित समय के अनुसार स्वामी जी जब दरबार में पहुंचे, उस समय नन्हीं जान राजा के पास आई हुई थी। स्वामी जी के आने के समय देख राजा घबरा गये और स्वयं कंधा देकर डोली उठवा दी। महर्षि इस दृश्य को देख अत्यन्त क्षुब्ध हो गये और उस दिन अपने उपदेश में राजधर्म का वर्णन करते हुए राजा को सिंह और वेश्याओं को कुतिया के समान बताया और कहा कि राजा का सम्बन्ध सिंहनियों से तो उचित है, कुतियों से नहीं। नन्हीं जान ने जब यह सुना तो वह जल उठी और उसने षड्यन्त्र को बलपूर्वक अपने हाथ में लिया।

विपरीत दैव चक्र

इस षड्यंत्र का पूर्व आभास इस घटना से मिला कि स्वामी जी के 550 रु० और कुछ सामान की चोरी कल्लू कहार द्वारा हुई, उसकी तलाश व पकड़ने में रियासत के अधिकारियों ने कोई विशेष यत्न नहीं किया। उस दिन पहरेदार भी सो गये थे। यह घटना 20 सितम्बर को हुई। 26 सितम्बर को स्वामी जी ने तीन पत्र क्रमशः जोधपुर राजा, दूसरा उनके भाई राव तेज सिंह और तीसरा कर्नल प्रतापसिंह को यह सूचित करते हुए लिखे कि वे 1 अक्तूबर को यहाँ से विदा हो जाएंगे इसलिए सवारी का प्रबन्ध कर दें। यहां फिर प्रतिकूल दैवी घटना चक्र चलता है। 1 अक्तूबर को भारी वर्षा हो जाती है और ऋषि को बाध्य हो कर 7-8 दिन के लिए अपनी यात्रा स्थगित करनी पड़ती है।

षड्यन्त्र चालू हो गयाः ऋषि को दूध में विष

अब आश्विन बदी 30, अमावस्या की रात, 1 अक्तूबर को महर्षि अपने परमभक्त मसूदा रियासत के राजा के पास जाने को उद्यत थे, उसी रात नन्हीं जान वेश्या का षड्यन्त्र चालू हो जाता है। दैव चक्र प्रबल विपरीत दिशा में जा रहा था। इसी रात धौल मिश्र व जगन्नाथ ब्राह्मण रसोइये के हाथ से यथानियम, महर्षि ने दूध पिया जिसमें कांच पीसकर मिला दिया गया था। आधी रात नींद खुली। वमन हुआ। ऋषि समझ गये कि विष दिया गया है। उसे निकालने के लिए उन्होंने स्वयं वमन का उपचार किया, पर कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। अंतड़ियों, छाती, उदर, इत्यादि में तीव्र वेदना चल रही थी। विष रक्त के साथ मिलकर सारे शरीर को विकृत कर चुका था।

जगन्नाथ की अपराध स्वीकृतिः ऋषि द्वारा हत्यारे को भागने के लिये धन

महर्षि ने जगन्नाथ रसोइये को बुलाया। वे जान गये थे कि इसी ने विष दिया है। उसने अपना अपराध भी स्वीकार किया। ऋषि ने इतना ही कहा, तुमने कुछ धन के लोभ से मेरे महान् कार्यक्रम को विफल बना दिया। अब तुम यहाँ से भाग जाओ। मेरे शिष्य तुम्हें जीवित नहीं रहने देंगे। रसोइये के यह कहने पर कि मेरे पास कुछ भी नहीं है जिससे मैं भाग सकूं और अनजान होने से यह भी नहीं जानता कि किधर भागूं। महर्षि ने उसे अपने सन्दूक से यात्रा के लिए पर्याप्त धनराशि निकालकर दे दी और नेपाल की ओर चले जाने का मार्ग भी बता दिया। ऋषिवर ने कहा:-

मैं किसी की कैद कराने नहीं आया, किन्तु संसार मात्र को मुक्त कराना ही मेरा परम कर्त्तव्य है।

मुस्लिम डाक्टर की शरारत

राव राजा तेजसिंह ने जेल के डाक्टर सूरजमल को बुलवाया। जी को तीव्र पीड़ा के साथ ज्वर भी हो गया था। कर्नल प्रताप सिंह को सूचना मिली। वे तत्काल आये। पर दरबार की ओर से डा० अली मर्दान खां को इलाज के लिए नियुक्त किया गया। पीछे से पता चला कि हत्या के इस षड्यन्त्र में इस डाक्टर का भी हाथ था। इसने ऐसी दवाएं दीं जिससे स्वामी जी की हालत निरन्तर बिगड़ती गई। दस्तों की संख्या बढ़ती गई, मुंह, सिर और माथा छालों से भर गये। हिचकी बंध गई और शरीर अत्यन्त कृश होने लगा। पर यह धूर्त डाक्टर राज्य अधिकारियों और सब लोगों से यही कहता रहा कि स्वामी जी की हालत सुधर रही है।

सारे देश में ऋषि के रोग से घबराहट

12 अक्टूबर तक महर्षि की बीमारी का समाचार जोधपुर से बाहर किसी को ज्ञात नहीं हुआ। अचानक अजमेर में एक आर्य सज्जन ने राजपूत गजट में प्रकाशित इस समाचार को देख लिया। छानबीन शुरू हुई ला० जेठमल जोधपुर दौड़े ऋषि की हालत देख घबरा गये। चारों ओर तार खटखटाए। आर्य जगत् में कोलाहल मच गया। आश्चर्य है, महर्षि सरीखे विश्व वरेण्य व्यक्ति के जीवन के साथ रियासत की ओर से इस प्रकार खिलवाड़ होता रहा और उनका जीवन एक तीसरे दर्जे के केवलमात्र चापलूस डाक्टर के निर्मम हाथों में सौंप दिया गया।

आबू यात्रा: अंग्रेज डाक्टर भी षड्यंत्र में

चारों और बदनामी होते देख डा. अली मर्दान खां ने 15 अक्तूबर को अपना पिंड छुड़ाने के लिये स्वामी जी को आबू पर्वत पर भेजने का प्रस्ताव रखा। राज्य की ओर से विदाई का प्रबन्ध किया गया। आबू जाते समय मार्ग में भेरा (पंजाब) के सरकारी डाक्टर लक्ष्मणदास, जो बदल कर अजमेर जा रहे थे, महर्षि का नाम और उनकी बीमारी का हाल सुन तत्काल रास्ते से ही वापस आबू आ गये और इलाज अपने हाथ में ले लिया। यहां फिर दुर्भाग्य ने पीछा किया। इस डाक्टर की श्रद्धापूर्ण चिकित्सा से 6-7 दिन में तनिक लाभ हो रहा था कि इनके अंग्रेज अफसर ने छुट्टी नहीं दी। इन्होंने त्यागपत्र दे दिया पर वह भी स्वीकृत नहीं किया गया। डाक्टर लक्ष्मण दास के जाते ही स्थिति फिर बिगड़ गई। अत: भक्तजन महर्षि को 29 अक्तूबर प्रात: अजमेर वापस ले आए।

आबू से अजमेर: ऋषिवर का अनुपम धैर्य और प्रभु विश्वास

इतने कष्ट में भी ऋषि का धैर्य आश्चर्यजनक था। उसे देख मित्र और शत्रु दांतों तले अंगुली दबाते थे। इतना कष्ट और आह तक नहीं धैर्य से रोग सह रहे थे। शरीर छालों से भरा हुआ था, बोलने में असह्य कष्ट हो रहा था, हिलना डुलना भी कठिन हो रहा था। ऐसी दशा में ऋषि के मुंह पर न घबराहट थी और न खिजलाहट थी, गम्भीर चेहरा और वहीं शांत मुद्रा। जिन व्यक्तियों ने उस दशा में महर्षि को देखा, उन्होंने अनुभव किया कि इस मनुष्य में अवश्य ही कोई दिव्य शक्ति काम कर रही है और इस महापुरुष के हृदय में निश्चय ही परमात्मा की दिव्य ज्योति जल रही है।

मसूदा यात्रा के लिये आग्रह

29 अक्तूबर को स्वामी जी ने अपने भक्तों से कहा, हम को मसूदा ले चलो। शिष्यजनों ने कहा कि आराम होने पर हम आप को वहां ले चलेंगे। इस हालत में बार बार यात्रा करना ठीक नही है। इस पर महाराज ने कहा कि दो दिन में हमें वहां पूरा आराम आ जाएगा। ऋषि का यह उत्तर स्मरणीय है। इस दिन स्थिति बिगाड़ की ओर थी। तकिये के सहारे उनके आग्रह पर उन्हें बैठा दिया गया। सांसें तब जल्दी जल्दी चल रही थी। स्वामी जी उसे रोक कर बल से फैंक देते थे और ईश्वर ध्यान में मग्न थे। रात को अधिक कष्ट रहा।

गम्भीर स्थिति

30 अक्तूबर को हालत बहुत बिगड़ गई। अजमेर के सिविल सर्जन डा. न्यूमैन बुलाए गये। स्वामी जी को देख कर डाक्टर साहब आश्चर्य से कहने लगे। धन्य है यह अद्भुत महान व्यक्ति। हमने ऐसे दृढ़ हृदय का व्यक्ति नहीं देखा जिसे इस प्रकार नख से शिखा तक अपार पीड़ा हो और वह तनिक आह या उफ तक न करे। 30 अक्तूबर 11.00 बजे दिन के श्वासगति उखड़ने लगी। महर्षि के आदेश अनुसार सब औषधियां बंद कर दी गई। एक शिष्य ने पूछा कि आप का चित्त कैसा है? उत्तर दिया, अच्छा है। एक मास के पश्चात आज आराम अनुभव हो रहा है। लाला जीवनदास जी लाहौर से अजमेर दर्शनार्थ आए थे। उन्होंने पूछा, इस समय आप कहां हैं? महर्षि बोले, ईश्वर इच्छा में। इसी स्थिति में शाम के 5 बज गये। स्वामी जी सर्वथा सावधान थे। किसी ने पूछा अब आपकी तबीयत कैसी है? महाराज बोले अच्छी है, प्रकाश और अंधकार का भाव है। साढ़े पांच बजे ऋषिवर ने आदेश दिया कि सब लोगों को बुलाओ और हमारे पीछे खड़ा कर दो। कोई हमारे सम्मुख न हो। चारों ओर के द्वार व छत्त के रोशनदान खोल दो। ऋषि की इन आज्ञाओं का तत्काल आदर किया गया।

अन्तिम क्षण

महर्षि ने पूछा कौन सा पक्ष, क्या तिथि और क्या वार है? एक भक्त ने उत्तर दिया कि कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष की संधि, अमावस और मंगलवार है। यह सुन छत्त और दिवारों की ओर दृष्टि की, फिर वेद मंत्र पढ़ तत्पश्चात संस्कृत में ईश्वर की उपासना की, आर्य भाषा में ईश्वर के गुण का वर्णन कर बड़े हर्ष और उत्साह के साथ गायत्री मंत्र का सस्वर पाठ करने लगे। उसके बाद विशेष आह्लद और प्रसन्नचित्त के कारण समाधि सदृय दशा में नयन खोल कर कहने लगे।

हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान ईश्वर, तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा तूने अच्छी लीला की।

महाप्रयाण

इस इतना कह स्वामी जी महाराज ने जो सीधे लेट रहे थे स्वयं करवट ली और एक बार श्वास को रोक कर एकदम बाहर निकाल दिया। इस क्रिया के साथ, इस महानात्मा ने इस विश्व से महाप्रयाण किया और इस मानव जीवन की लीला समाप्त की। इस समय संध्या के छ: बजे थे।

श्रीमद्दयानन्द वचनामृत

महर्षि ने कहा था-

धर्म्मोपदेश-

१. जिस ब्रह्म के जानने के लिए प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध सब लोक दृष्टान्त हैं, जो सर्वत्र व्याप्त हुआ सबका आवरण और सभी को प्रकाश करता है और सुन्दर नियमों के साथ अपनी-अपनी कक्षा में सब लोकों को रखता है, वही न्यायकारी परमात्मा सब मनुष्यों के निरन्तर उपासना करने योग्य है।

२. हे मनुष्यो! जो अद्वितीय, सबसे उत्तम, सच्चिदानन्द स्वरूप, न्यायकारी और सबका स्वामी है, उसको त्याग करके अन्य की उपासना कभी न करो।

३. ईश्वराभिमुख जन ही सदा सुखी रहते हैं-

हे प्रिय बन्धुओ! ईश्वर सब जगत् के बाहर और भीतर सूर्य के समान प्रकाश कर रहा है। वही पृथिवी आदि जगत् को रच के धारण कर रहा है और विश्वधारक शक्ति को भी निवास देने और धारण करने वाला है और सब जगत् का परम-मित्र और राजा के समान हम लोगों का रक्षक तथा पालनकर्त्ता वही एक ही है और कोई भी नहीं। जो जन उस ईश्वर के पुर:सर हैं अर्थात् ईश्वराभिमुख हैं वे ही शर्मसद् अथवा सुख में सदा रहते हैं। जैसे पुत्र अपने पिता के घर में आनन्दपूर्वक निवास करते हैं, वैसे ही जो परमात्मा के भक्त हैं, वे सदा सुखी रहते हैं। जो अनन्य-चित्त होकर उस निराकार सर्वत्र व्यापक ईश्वर की सच्ची श्रद्धा से भक्ति करते हैं, जैसे पतिव्रता देवी अपने पति की सेवा में सदा तत्पर रहती है, वैसे आओ भाई लोगो! हम भी प्रीति-युक्त होकर ईश्वर की भक्ति करें और सब मिलकर उस परमात्मा से परम-सुख का लाभ प्राप्त करें।

४. धर्मार्थ काममोक्ष-प्राप्ति का उपाय-

सब मनुष्यों को चाहिए कि सच्चिदानन्द, नित्यज्ञानी, नित्य-मुक्तस्वभाव, अजन्मा, निराकार, सर्वशक्तिमान् न्यायकारी, सर्वव्यापक, कृपालु, सब जगत् के जनक और धारण करने हारे परमेश्वर की ही सदा उपासना करें, जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, जो मनुष्य-देहरूप वृक्ष के चार फल हैं वे उसकी भक्ति और कृपा से सर्वदा हम सब मनुष्यों को प्राप्त हों। (पंच महायज्ञ विधि)

५. इष्ट-सुख किसे मिलते हैं?

वह परमात्मा सर्वज्ञ, सबके रचने वाला, सर्वव्यापक, आकाशवत् निर्विकार, अक्षोभ्य और सबका आधार हैं, वह सर्वजगत् का धारणकर्त्ता और विधाता है। जो मनुष्य उस ईश्वर की भक्ति, उसी में विश्वास और उसी की पूजा करते हैं, उसको छोड़ के अन्य किसी को लेश-मात्र भी नहीं भजते, उन पुरुषों को ही सब इष्ट-सुख प्राप्त होते हैं और किसी को नहीं। वह ईश्वर अपने भक्तों को सदा सुख में ही रखता है और वे भक्त सम्यक् स्वेच्छापूर्वक उस प्रभु के परमानन्दस्वरूप में विचरते हैं कभी दु:ख को प्राप्त नहीं होते।

६. विघ्नों को दूर करने का उपाय-

जो केवल एक अद्वितीय ब्रह्मतत्त्व है, उसी में प्रेम और सर्वदा उसी की आज्ञा पालन में जो पुरुषार्थ करता है, वही एक-मात्र सम्पूर्ण विघ्नों को नाश करने का वज्ररूप (अमोघ) शस्त्र है, अन्य कोई नहीं। इसलिए सब मनुष्यों को अच्छी प्रकार प्रेम-भाव से ईश्वर के उपासना योग में नित्य पुरुषार्थ करना चाहिए।

७. प्राणों से प्यारा ओ३म् नाम-

सब मनुष्यों के प्रति ईश्वर उपदेश करता है कि हे मनुष्यो! मेरे सुलक्षणों से युक्त पुत्र के तुल्य प्राणी से प्यारा निजनाम ओ३म् है। (यजु० भा० ४०-१७)

८. प्रणव-जप-विधि तथा लाभ-

परमेश्वर के ओ३म् नाम का जप अर्थात् स्मरण और उसी का अर्थ-विचार सदा करना चाहिए, जिससे कि उपासक का मन एकाग्रता, प्रसन्नता और ज्ञान को यथावत् प्राप्त होकर स्थिर हो, जिससे उसके हृदय में परमात्मा का प्रकाश और परमेश्वर की प्रेम-भक्ति सदा बढ़ती जाए। इससे उपासक को यह भी फल होता है कि उनको अन्तर्यामी परमात्मा की प्राप्ति तथा अविद्या आदि क्लेशों और रोग आदि विघ्नों (अन्तरायों) का नाश भी हो जाता है। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

९. प्रणव-जपका फल-

जब शय्या-शायी होने लगे तब प्रणव-पवित्र का जप करो। जब तक नींद न आए, जप करते रहो, यहाँ तक कि नाम-स्मरण करते ही सो जाए। इस प्रकार प्रणव-पवित्र के जप से साधक को उत्तमोत्तम फल होता है। उसकी वासनामय देह बदल जाती है।

(श्री. मद्दयानन्द प्रकाश)

१०. कैवल्य-प्राप्ति का साधन-

जो युक्ताहार-विहार करने वाले, वेदों को पढ़, योगाभ्यास कर, अविद्यादि क्लेशों को छुड़ा, योग की सिद्धियों को प्राप्त हो और उनके अभिमान को भी छोड़ेंगे वे कैवल्य को प्राप्त होते हैं, वे ब्रह्मानन्द का भोग करते हैं। (यजु० भाष्य १९-७४)

११. योग की सिद्धियां सत्य हैं-

एक भक्त जी ने स्वामी जी से निवेदन किया, भगवन्! पातञ्जल शास्त्र का विभूतिपाद क्या सच्चा है?

महाराज ने उत्तर दिया-आप व्यर्थ ही सन्देह करते हैं। योगशास्त्र

अक्षरशः सत्य है। यह कोई पुराणों की-सी कोरी-कल्पना नहीं है, किन्तु क्रियात्मक और अनुभव सिद्ध शास्त्र है। दूसरी विद्याओं में उत्तीर्ण होने के लिए आप लोग कई वर्ष व्यय कर देते हैं, किन्तु इसके लिए यदि आप तीन मास भी मेरे पास निवास करें और मेरे कथनानुसार योग-क्रियाएं साधें तो आप योग-शास्त्र की सिद्धियों का स्वयं साक्षात् कर लेंगे। (श्री. मद्दयानन्द प्रकाश)

१२. आनन्द प्राप्ति का उपाय-

जो पुरुष विद्वान्, ज्ञानी, धार्मिक सत्पुरुषों का संगी, योगी, पुरुषार्थी, जितेन्द्रिय और सुशील होता है, वही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होकर इस जन्म और पर-जन्म में सदा आनन्द में रहता है। (स० प्र० समु० ११)

१३. तप के लक्षण-

यथार्थ का ग्रहण, सत्य मानना, वेदादि सत्यशास्त्रों का सुनना, अपने मन को अधर्माचरण में न जाने देना, श्रोत्रादि इन्द्रियों को दुष्टाचार से रोक कर श्रेष्ठाचार में लगाना, क्रोधादि को त्याग के शान्त रहना, विद्यादि शुभ गुणों का दान करना, अग्निहोत्रादि और विद्वानों का संग करना, जितने भूमि, अन्तरिक्ष और सूर्यादि लोकों में जो पदार्थ हैं, उनका यथा-शक्ति दान करना और योगाभ्यास, एक ब्रह्म की उपासना-यह सब कर्म करना तप कहाता है।

(संस्कार विधि वेदारम्भ संस्कार)

१४. कामवासना जीतने का उपाय-

कामवासना जीतने का यह उपाय है कि एकान्त स्थान में रहें, नाच (सिनेमा) आदि कभी न देखें, अनुचित स्वरूप का देखना, अनुचित शब्द का सुनना और अनुचित वस्तुओं का स्मरण करना परित्याग कर देवें, स्त्रियों की ओर न निहारें, नियमपूर्वक जीवन व्यतीत करें। इन उपायों से कामवासना मन्द हो जाती है। मनुष्य जितना भी वासना की तृप्ति का यत्न करता है वह शान्त न हो उतनी अधिक बढ़ती चली जाती है, इसलिए विषयवासना का चिन्तन भी न करें। जितेन्द्रिय बनने के अभिलाषी को भगवान् के पवित्र प्रणव (ओ३म्) नाम का जाप करते रहना चाहिए। (श्री मद्दयानन्द प्रकाश)

१५. द्वेषी का द्वेष, द्वेष करने से दूर नहीं होता-

अपमानकर्त्ता का अपमान करने से उसका सुधार नहीं होता, किन्तु सम्मान देने से सुधार हो जाता है, जैसे आग में आग डालने से वह शान्त नहीं होती, ऐसे ही द्वेषी की द्वेष बुद्धि उसके साथ द्वेष करने से दूर नहीं हो सकती। जैसे आग को शान्त करने का साधन जल है, उसी प्रकार द्वेष के मिटाने का साधन शान्ति धारण करना है।

(श्री. मद्दयानन्द प्रकाश)

१६. मनुष्यों को चाहिए कि असत्य का सुनना, खोटा देखना, झूठी-स्तुति, प्रार्थना, प्रशंसा और व्यभिचार कभी न करे।

१७. हे मनुष्यो! आप लोग जिससे सब वेद उत्पन्न हुए हैं, उस परमात्मा की उपासना करो, वेदों को पढ़ो और उसकी आज्ञानुकूल वर्त्त के सुखी होओ।

१८. सत्य उपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

१९. धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे। (स.प्र.)

२०. प्राणायाम की विधि तथा लाभ-

प्राण को बल से (नासिका द्वारा) बाहर फैंककर बाहर ही यथाशक्ति रोक देवे। जब बाहर निकालना (अर्थात् रेचक करना) चाहे तब मूत्रेन्द्रिय को ऊपर खींच रखे। इससे प्राण बाहर अधिक ठहर सकता है। जब घबराहट हो, तब धीरे-धीरे भीतर वायु को लेके फिर भी वैसे ही करता जाए (अर्थात् कुम्भक, रेचक, बाह्य कुम्भक, पूरक तथा आभ्यन्तर कुम्भक करके) प्राणायाम जितना सामर्थ्य और इच्छा हो उतना ही करे और मन में ओ३म् का जाप करता जाए। इस प्रकार करने से आत्मा और मन की पवित्रता और स्थिरता होती है। (सत्यार्थ प्रकाश)

२१. जब निषेद्ध है तो मांस का सर्वदा निषेध है। (गो० क० नि०)

२२. पशु मार के होम करना वेदादि सत्य शास्त्रों में कहीं नहीं लिखा।

२३. सर्वसंसार की हानि करने वाले-

सुखकारक पशुओं के गले छुरों से काटकर जो अपना पेट भरते हैं वे सर्व संसार की हानि करते हैं। क्या संसार में उनसे भी अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारी, दुःख देने वाले और पापी जन होंगे? (गो करुणानिधि)

२४. पशु-हिंसा में पाप-

इसीलिए ब्रह्मा से लेकर आज पर्य्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे और अब भी समझते हैं। (गोकरुणानिधि)

२५. मांसाहारियों के हृदय-परिवर्तन की प्रार्थना-

हे परमेश्वर! तू क्यों इन पशुओं पर, जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या उनके लिए तेरी न्याय-सभा बन्द हो गई है? क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता? और उनकी पुकार नहीं सुनता? क्यों इन मांसाहारियों के आत्मा में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता? जिससे इन बुरे कामों से बचें? (गोकरुणानिधि)

२६. मांस छिलकावत् और दुग्धसार-सामान-

भला तनिक विचार करो कि छिलके के खाने से अधिक बल होता है अथवा रस जो सार है, उसके खाने से? मांस छिलके के समान और दूध-घी सार-रस के समान है। इसको जो युक्ति-पूर्वक

खावे तो मांस से अधिक गुण और बलकारी होता है। फिर मांस का खाना व्यर्थ और हानिकारक, अन्याय, अधर्म और दुष्ट कर्म क्यों नहीं? (गोकरुणानिधि)

२७. धर्म और अधर्म की व्याख्या-

जिस-जिस व्यवहार से दूसरों की हानि हो, वह-वह अधर्म और जिस-जिस व्यवहार से उपकार हो, वह धर्म कहाता है। तो लाखों के सुख-लाभ-कारक पशुओं का नाश करना अधर्म क्यों नहीं? (गोकरुणानिधि)

२८. कहने-सुनने-पढ़ने-पढ़ाने का फल क्या ?-

कहने, सुनने, पढ़ने, पढ़ाने का फल यही है कि जो वेद और वेदानुकूल स्मृतियों में प्रतिपादित धर्म का आचरण करना। इसलिए धर्माचार में सदा युक्त रहे।

२९. श्रीकृष्ण निष्कलङ्क आप्त पुरुष थे-

देखो! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है, उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्य्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं-दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी लगाई और कुब्जा दासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल में क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाए हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मतवाले श्रीकृष्ण जी की बहुत-सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न हो तो श्रीकृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती? (सत्यार्थप्रकाश समु० ११)

३०. मूर्त्ति मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी-

जब सम्वत् १९१४ (१९१४-५७=१८५७ ई०) के वर्ष में तोपों के मारे मूर्त्तियां अंग्रेज़ों ने उड़ा दी थीं, प्रत्युत बाघर लोगों ने जितनी वीरता की और लड़े, शत्रुओं को मारा। परन्तु मूर्त्ति की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्री कृष्ण के सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे उड़ा देता और यह भागते फिरते। भला यह तो कहो जिसका रक्षक मार खाए उसके शरणागत क्यों न पीटे जाएं। (सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास ११)

३१. पक्षपाती न अपना गुण-दोष देख सकता है न पराया-

सब मनुष्यों को उचित है कि सबके मतविषयक पुस्तकों को देख समझकर कुछ सम्मति वा असम्मति देवें वा लिखें, नहीं तो सुना करें, क्योंकि जैसे पढ़ने से पण्डित होता है वैसे सुनने से बहुश्रुत होता है... जो कोई पक्षपात रूप यानारूढ़ हो के देखते हैं उनको न अपने और न पराये गुण-दोष विदित हो सकते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश अनुभूमिका ३)

३२. सज्जनों की रीति-

यही सज्जनों की रीति है कि अपने वा पराये दोषों को दोष और गुणों को गुण जानकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें और हठियों का हठ, दुराग्रह न्यून करें, करावें क्योंकि पक्षपात से क्या-क्या अनर्थ जगत् में न हुए और न होते हैं। सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षण-भंग जीवन में पराई हानि करके लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्य को रखना मनुष्यपन से बहिः है। (सत्यार्थप्रकाश अनुभूमिका ४)

३३. महर्षि का मन्तव्य वही जो सबको मान्य हो-

मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूं कि जो तीन काल में सबको एक-रस मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत-मतान्तर चलाने का लेश-मात्र भी अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त में प्रचारित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्म युक्त चाल-चलन हैं उनका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता न करना चाहता हूं, क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

३४. मनुष्य किसे कहना चाहिए ?

मनुष्य उसी को कहना कि मनन-शील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओं की, चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ महाबलवान् और गुणवान् हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश भूमिका)

३५. जीव और ईश्वर ?-

जीव और ईश्वर स्वरूप और वैधर्म्य से भिन्न और व्याप्यव्यापक और साधर्म्य से अभिन्न हैं अर्थात् जैसे आकाश से मूर्त्तिमान् द्रव्य कभी भिन्न न था, न है, न होगा और न कभी एक था, न है, न होगा। इसी प्रकार परमेश्वर और जीव को व्याप्यव्यापक, उपास्य-उपासक और पिता-पुत्र आदि सम्बन्ध-युक्त मानता हूं।

३६. अनादि पदार्थ तीन हैं-

अनादि पदार्थ तीन हैं-एक ईश्वर, द्वितीय जीव, तीसरा प्रकृति अर्थात् जगत् का कारण। इन्हीं को नित्य भी मानते हैं। जो नित्य पदार्थ हैं, उनके गुण, कर्म, स्वभाव भी नित्य हैं। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

३७. मुक्ति के साधन-

ईश्वरोपासना, अर्थात् योगाभ्यास, धर्मानुष्ठान, ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्ति, आप्त विद्वानों का संग, सत्य विद्या, सुविचार और पुरुषार्थ आदि हैं। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

३८. बुद्धि की प्रार्थना-

मनुष्यों को चाहिए कि जब-जब ईश्वर की प्रार्थना तथा विद्वानों का संग करें तब-तब बुद्धि की ही प्रार्थना वा श्रेष्ठ पुरुषों की चाहना किया करें।

३९. यज्ञ किसे कहते हैं ?

यज्ञ उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार, यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या, उससे उपयोग और विद्यादि शुभ गुणों का दान, अग्निहोत्रादि जिससे वायु, वृष्टि, जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाते हैं, उसको उत्तम समझता हूं। (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश)

४०. मद्यनिषेध-

सज्जन लोगों को मद्य पीने का नाम भी न लेना चाहिए।

सामाजिक प्रेरणा

४१. शत्रु कैसे मित्र बन सकते हैं ?

जब सब मनुष्य विरोध को छोड़कर सबके उपकार करने में प्रयत्न करते हैं, तब शत्रु भी मित्र हो जाते हैं।

४२. परमात्मा सब मनुष्यों पर कृपा करे कि सबसे परस्पर मेल और एक-दूसरे के सुख की उन्नति करने में प्रवृत्त हों।

४३. सर्वश्रेष्ठ दान ?

संसार में जितने दान हैं अर्थात् जल, अन्न, गौ, पृथिवी, वस्त्र, तिल, सुवर्ण और घृतादि इन सब दानों में वेद विद्या का दान अति श्रेष्ठ है।

४४. कल्याणार्थ प्रश्नोत्तर-

जब-जब विद्वानों के निकट जावें तब-तब सबके कल्याण के लिए प्रश्न और उत्तर किया करें?

४५. सुख या दुःख क्यों प्राप्त होते हैं ?

मैंने परीक्षा करके निश्चय किया है कि जो धर्म युक्त व्यवहार में ठीक-ठीक वर्त्तता है, उसको सर्वत्र सुख-लाभ और जो विपरीत वर्त्तता है वह सदा दुःखी होकर अपनी हानि कर लेता है।

४६. परस्पर मेल और सुख-उन्नति की प्रार्थना-

परमात्मा सब मनुष्यों पर कृपा करें कि परस्पर-मेल और एक-दूसरे के सुख की उन्नति करने में प्रवृत्त हों।

४७. सबको विद्या-सुशिक्षा से युक्त करें-

सब मनुष्यों को उचित है आप अपने लड़के-लड़की, इष्ट-मित्र, अड़ोसी-पड़ोसी और स्वामी-भृत्य आदि को विद्या और सुशिक्षा से युक्त करके आनन्द करते रहें।

४८. विद्या किसे प्राप्त होती है और किसे नहीं-

हे मनुष्यो! जो अशुद्ध आहार-व्यवहार करने वाले, लम्पट, चुगल और कुसंगी हैं उनको विद्या कभी नहीं प्राप्त होती है, और जो पवित्र आहार और व्यवहार करने वाले, जितेन्द्रिय, यथार्थवक्ता, सत्संगी, पुरुषार्थी हैं, उनको विद्या प्राप्त होती है-ऐसा जानिए।

(ऋ० भा० ६-२४-४१)

४९. सुखी दीर्घ जीवन का रहस्य-

जो मनुष्य विद्वानों की सेवा से उत्तम-गुण, कर्म और स्वभाव वालों को प्राप्त होते हैं वे सुख की वृद्धि और अतिकाल पर्य्यन्त जीवन से युक्त और अच्छे गृहों वाले होकर शरीर और आत्मा से पुष्ट होते हैं।

५०. वीर्य-रक्षा के लाभ-

वीर्य्य-रक्षा में आनन्द और नाश करने में दुःख है। देखो!... जिसके शरीर में वीर्य्य सुरक्षित रहता है, तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है। वीर्य-रक्षा की यही है रीति कि-विषयों की कथा विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री-दर्शन, एकान्त-सेवन, सम्भाषण और स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग सदा पृथक् रह कर उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्या को प्राप्त करें।

५१. प्राणायाम का फल-

प्राणायाम द्वारा प्राण अपने वश में होने से मन और इन्द्रिय भी स्वाधीन होते हैं, बल पुरुषार्थ बढ़कर बुद्धि तीव्र और सूक्ष्मरूप हो जाती है, जो कि बहुत कठिन और सूक्ष्म विषय को भी ग्रहण कर लेती है। इससे मनुष्य शरीर में वीर्य वृद्धि को प्राप्त होकर बस, पराक्रम, जितेन्द्रियता और सब शास्त्रों को थोड़े ही काल में समझ कर उपस्थित कर लेता है। (सत्यार्थ प्रकाश)

५२. प्राणायाम से परमात्म-स्वरूप की प्राप्ति-

इसी प्रकार बारम्बार (प्राणायाम) का अभ्यास करने से प्राण उपासक के वश में हो जाते हैं और प्राणों के स्थिर होने से मन और मन के स्थिर (एकाग्र) होने से आत्मा भी स्थिर हो जाता है। इन तीनों (प्राण, मन और आत्मा) के स्थिर होने पर आत्मा के अन्दर जो आनन्द-स्वरूप, अन्तर्यामी व्यापक परमेश्वर है, उसके स्वरूप में मग्न हो जाना चाहिए। जैसे मनुष्य जल में गोता मारकर ऊपर आता है और फिर गोता लगा जाता है, इसी प्रकार आत्मा को परमेश्वर के स्वरूप में बार-बार मग्न कर दें। (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, उपासना प्रकरण)

॥ ओ३म् ॥

अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये ऽसम्भूतिमुपासते।

ततो भूय इ वते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ।। य.40/3

जो ईश्वर के स्थान पर कारण रूप और कार्यरूप प्रकृति की पूजा करते हैं वह घोर अंधकार में गिरते हैं।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित–1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

जिया लाल शर्मा	ललित मोहन पाठक	सुशील पुरी	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

उत्क्राम महते सौभगाय।

य. 11/21

हे मनुष्य ! महान ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये आगे बढ़।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज, राहों रोड, नवांशहर

WebSite: www.blmgirlscollege.com, email:blmcollege@yahoo.com
Phone No. 01823-220026, Fax: 01823-221474

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

प्रमुख विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
3. गरीब वर्ग की छात्राओं के लिये विशेष सुविधा।
4. एम.ए. (राजनीति विज्ञान, हिन्दी), पी.जी.डी.सी.ए., बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., ड्रैस डिजाइनिंग डिप्लोमा (U.G/P.G), कॉस्मोटॉलोजी डिप्लोमा (U.G/P.G) आदि कोर्स की व्यवस्था।
5. खेलों की उचित व्यवस्था (गत वर्षों से हैंडबाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस में विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय स्थान)

❖❖❖❖❖❖❖

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

देशबन्धु भल्ला	विनोद भारद्वाज	तरणप्रीत कौर
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म्॥

संसमिद् युवसे वृषन्नग्ने विश्वायर्न्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे न नो वसून्याभर॥ १ ।।

हे सुखो के वर्षक, सबके स्वामी, प्रकाश स्वरूप परमात्मन्! आप संसार के सब पदार्थों की उचित व्यवस्था के अनुसार परस्पर मिलाते हो, और फिर उनका वियोग भी आप ही करते हो, आप अपनी शक्तियों से इस धरती पर चमक रहे हो, हे ऐसे महान् सामर्थ्य वाले भगवान ! आप हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख–रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

दीपावली के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।।

❖❖❖

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

❖❖❖

अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

विनोद भारद्वाज	**एस.के. बरूटा**	**संजीव डाबर**
प्रधान	सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवा: क्षुधमिद् वधं ददु:, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यव:।

उतो रयि: पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
2. धार्मिक शिक्षा।
3. कम्प्यूटर शिक्षा।
4. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।
5. विशाल क्रीडा क्षेत्र।
6. सुन्दर भवन।
7. हरे-भरे वृक्ष।
8. उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।
9. हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	**ललित कुमार शर्मा**	**अचला भल्ला**	**अमित सभ्रवाल**
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्
ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

-महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार विमन नवांशहर

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

◆◆◆

डा. सी.एम.भंडारी	डा. मीनाक्षी शर्मा	गुरविन्द्र कौर
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि।

(ऋग्वेद. 1/4/6)

हम सदा परमेश्वर की शर्मणि–शरण में रहें।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा	**डा.एस.एम शर्मा**	**सूक्ष्म आहलूवालिया**
प्रधान	सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

यञ्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।

दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ- हे प्रभो ! मेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान-साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

अरुण थापर	बी.बी.गोयल	रवि महाजन	श्रीमती राजेश शर्मा	अनुबाला
प्रधान	उप प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

सख्ये ते इन्द्र याजिनो मा भेम शवसस्पते।

त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम।।

भावार्थ: प्रभु के भक्तों में ऐसा विलक्षण बल आता है कि वे किसी से भी डरते नहीं क्योंकि जिनका रक्षक स्वयं प्रभु होवे, उनको डराने वाला कौन हो सकता है? वहीं प्रभु सदा अपराजित और हमेशा विजयी है इसलिये उसी को नमन करने योग्य है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य गर्ल्ज सी. सै.स्कूल, पुराना बाजार, दरेसी रोड लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में शहर की एक सौ दस वर्ष पुरानी संस्था

प्रमुख विशेषताएं

1. नर्सरी कक्षा से बारहवीं कक्षा तक गणित व विज्ञान विषयों के लिये **Smart Classes** की विशेष व्यवस्था।
2. अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम में पढ़ाने का उचित प्रबन्ध।
3. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ
4. स्वच्छ जल हेतु फिल्टर, बिजली के लिये जनरेटर, अग्निशमन यंत्रों इत्यादि सभी आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न
5. बोर्ड परीक्षाओं का शत-प्रतिशत परिणाम।
6. गत वर्ष की अपेक्षा छात्राओं की संख्या में वृद्धि।
7. कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
8. भव्य भवन खुले व हवादार कमरे, समृद्ध पुस्तकालय व सुसज्जित साईंस लैब।
9. छात्राओं की ज्ञान वृद्धि के लिये शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाने की व्यवस्था।
10. सांस्कृतिक व सह सहायक गतिविधियों का आयोजन
11. **Morning Assembly** में नैतिक मूल्यों व अच्छे संस्कारों को सुदृढ़ करने पर विशेष चर्चा।
12. प्रबन्धकृर्त सभा के सभी सदस्य संस्था को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिये निरन्तर प्रयासरत।

विशेष नोट: जरूरतमंद व योग्य छात्राओं के लिये निशुल्क पुस्तकें, वर्दियां, स्वैटर व जूते।

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

दिनेश बजाज	वजीर चंद	रणवीर शर्मा	अनीता जैन
प्रधान	उपप्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।

शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः ॥

भावार्थ- हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

दीपावली (ऋषि निर्वाण दिवस) के पावन पर्व पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री-नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक इंगलिश / हिन्दी मीडियम, पंजाबी पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विद्युत जेनरेटर तथा कैंटीन की उत्तम सुविधा।
6. खेलने के लिये खुला मैदान।
7. शानदार बोर्ड परीक्षा परिणाम।
8. उत्तम पुस्तकालय की सुविधा

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

अरुण सूद प्रधान | **श्रीमती राजेश शर्मा** वरिष्ठ उप प्रधान | **अमित सूद** प्रबन्धक | **विश्वनाथ जोशी** प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना ऋ. 1/3/12

ज्ञानमयी वेद वाणी अपने ज्ञान से ही बड़े भारी ज्ञान सागर का उत्तम रीति से ज्ञान कराती है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व

के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से सम्बन्धित क्षेत्र की एक मात्र अग्रणी नारी शिक्षण संस्था

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

यू.जी.सी. एक्ट 1956 के सेक्शन 2 (F) & 12 (B) से सम्बद्ध नैक (NAAC) द्वारा ग्रेड "B" सी.जी.पी.ए. 2.61 से प्रत्यापित संस्था में एल.बी.एस. कॉलजिएट सी.सै.स्कूल के अधीन बरनाला +1, +2 एवं महाविद्यालय में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर विभिन्न कक्षाओं, विषयों व कोर्सों के शिक्षण की सुचारू व्यवस्था।

स्नातक शिक्षण कक्षाएं व कोर्स

बी.ए. :- हिन्दी साहित्य, पंजाबी, पंजाबी साहित्य, अंग्रेजी, अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, इतिहास, लोक प्रशासन, कम्प्यूटर साईंस, फाईन आर्ट्स, गणित, साइकॉलॉजी, संगीत (कंठ्य), होम साईंस, फिजीकल एजुकेशन, फैशन डिजाइनिंग

❒ बी.कॉम
❒ बी.एस.सी. (मैडीकल/ नॉन मैडीकल)
❒ बी.सी.ए.
❒ बी.बी.ए.

यू.जी.सी. प्रदत्त बी.वॉक कोर्स:

❒ साफ्टवेयर डेवलेपमेंट
❒ फैशन डिजाइनिंग

स्नातकोत्तर शिक्षण कक्षाएं व कोर्स:

❒ एम.ए.पंजाबी
❒ एम.ए. इतिहास
❒ एम.एस.सी. (आई.टी.)
❒ एम.एस.सी. (एफ.टी.)
❒ पी.जी.डी.सी.ए.

विशेषताएं:-

❒ वातानुकूलित विशाल पुस्तकालय
❒ बहुद्देश्यीय विशाल सभागार एवं इन्डोर स्पोर्ट्स हॉल।
❒ सुविधा सम्पन्न छात्रावास।
❒ वाई फाई प्रांगण।
❒ सी.सी.टी.वी. कैमरों से लैस प्रांग्रण।
❒ उच्च तकनीकी युक्त वातानुकूलित कम्प्यूटर प्रयोगशाला।
❒ आधुनिक साधन सम्पन्न विज्ञान प्रयोगशालाएं
  ❒ भौतिक विज्ञान
  ❒ रसायन विज्ञान
  ❒ जीव विज्ञान
❒ स्वच्छ व स्तरीय कैंटीन व मैस
❒ जैनरेटरों व वाटर कूलरों (आर.ओ.) की व्यवस्था
❒ विभागीय कक्ष
❒ गांवों से छात्राओं को लाने ले जाने हेतु बसों का उचित प्रबन्ध।
❒ एन.सी.सी., एन.एस.एस., यूथक्लब, रैड रिब्बन का सुचारू प्रबन्ध।

शैक्षिक एवं शिक्षेत्तर उपलब्धियों के लिये पंजाबी विश्वविद्यालय में अपनी विशेष पहचान रखने वाली संस्था

भावी पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

डा.सूर्यकांत शोरी	**भारत भूषण मैनन**	**केवल जिन्दल**	**डा.नीलम शर्मा**
प्रधान	उपप्रधान	महासचिव	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के पावन पर्व पर

गांधी आर्य सी.सै.स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत-प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- स्कूल की छात्राओं को निशुल्क सिलाई सिखाई जाती है तथा प्रत्येक लड़की को एक एक सिलाई मशीन दी जाती है।
- स्कूल की छात्राओं को निशुल्क कुकिंग कोर्स भी करवाया जाता है।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम में गिद्दा-भंगडा के अलावा लोक गीत सिखाए जाते हैं।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- बिजली, पानी तथा साइलैंट जनरेटर का प्रबन्ध।
- पीने के पानी के लिये आर.ओ.सिस्टम तथा प्रत्येक ब्रांच में वाटर कूलर।
- खूबसूरत लाइब्रेरी का विशेष प्रबन्धक

संजीव शौरी
प्रधान

डा. सूर्यकान्त शोरी
वरिष्ठ उप प्रधान

केवल कृष्ण जिन्दल
मैनेजर

भारत मोदी
सचिव

राज महेन्द्र शर्मा
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, श्रृणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः शरदः शतं,भूयश्च शरदः शतात् ॥9॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं– हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

"अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।"

अनिल कुमार प्रधान

सुरेन्द्र गर्ग मैनेजर/ कोरस्पोडेंट

सुषमा कुमारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

अस्मे धेहि जातवेदो महिश्रवः

ऋग्वेदः 1/97/4

हे ज्ञान स्वरूप प्रभो ! आप हम में उत्तम यश, धन और ज्ञान धारण करें।

ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज सीनियर.सैकेंडरी स्कूल एवं वैदिक कन्या पाठशाला औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. आधुनिक कम्प्यूटर लैब।
5. वाटर कूलर तथा ध्वनि रहित जनरेटर का उचित प्रबन्ध।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. साफ सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
8. आठवीं कक्षा तक के बच्चों को दोपहर के मुफ्त भोजन की सुविधा एवं मुफ्त पुस्तकें।
9. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
10. गरीब एवं योग्य छात्राओं को आर्थिक सहायता।
11. बोर्ड की कक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम।
12. कल्चर संगीत कार्यक्रम के लिये योग्य तथा अनुभवी शिक्षा का प्रबन्ध।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	**अशोक कुमार अग्रवाल**	**विजय अग्रवाल**	**नीरू सैली**
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुषः सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी ओर महाश्सय होते हैं, सत्पुरुष कहलाते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै. स्कूल, बठिंडा

Ph.No. 0164-2238328

विशेषताएं:

1.नगर के मध्य स्थित।

2.योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।

3.विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।

4.शानदार परीक्षा परिणाम

5.नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

6.प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, R.O पानी आदि मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

अश्विनी कुमार मोंगा
प्रधान

श्रीमती ऊषा गोयल
संरक्षक

गौरी शंकर
उप प्रधान

सुरेन्द्र गर्ग
सचिव

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

॥ ओ३म् ॥

सत्पुरुष:– सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सबके हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के

पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

मुख्य विशेषताएं

1.उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग

2.खुले तथा हवादार कमरे।

3. वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल।

4. शानदार परीक्षा परिणाम

5. उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र कौशिक — प्रधान

नरेन्द्र कुमार — मैनेजर

प्रदीप कुमार — कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थः वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

❖❖❖

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां, जालन्धर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये, सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

राज कुमार
प्रधान

सुदेश कुमार
मैनेजर

श्रीमती सारिका
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरितादि्वाध्स्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

***

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

***

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व
शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के
विकास के लिये निरन्तर कार्यरत,
नैतिक शिक्षा पर
विशेष बल।

***

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और
आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये
सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा
प्रधान

सुधीर शर्मा
प्रबन्धक

मीनू सलूजा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म्॥

इमा ब्रह्मा सधमादे जुषस्व

ऋग्वेद 20/11/3

इन वेद वचनों को, हे विद्वन ! हर्षस्थान व सभा सदन में सेवो अर्थात बोलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह–विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत–प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10.रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11.प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

शिक्षा जगत में महकता हुआ चमन

सोम प्रकाश	**शैलेन्द्र मेहता**	**संतोष गोयल**
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थ: तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीप-उत्सव "दीपावली" के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल सी.सै. स्कूल–मोगा

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य, चरित्र निर्माण और सर्वतोमुखी विकास के लिये सेवा का अवसर दें।

❐ विशेष आकर्षण ❐

1. सुसज्जित भवन, खुले हवादार कमरे।
2. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
3. हाई पावर विद्युत जनरेटर, शुद्ध एवं शीतल पेयजल।
4. आधुनिक कम्प्यूटर प्रयोगशाला, स्मार्ट कक्षाएं व यंत्रों से लैस साईंस व गणित प्रयोगशाला।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों का विद्यालय में उचित प्रबन्ध।
6. उच्च स्तर की सफाई व बढ़िया अनुशासन।
7. नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा पर बल।
8. +2 की कक्षाओं का आरम्भ शीघ्र।
9. खेलों का उचित प्रबन्ध।
10. आवश्यक पाठ्य सामग्री युक्त पुस्तकालय।
11. वैदिक शिक्षा व साप्ताहिक हवन यज्ञ।
12. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सत्यप्रकाश उप्पल	**नरेन्द्र सूद**	**अनिल गोयल**	**समीक्षा शर्मा**
प्रधान	मैनेजर	सैक्रेटरी	प्राचार्य

॥ ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थः तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

❖❖❖

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीप-उत्सव ''दीपावली'' के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल मोगा

❒ प्रमुख विशेषताएं ❒

1. आर्य समाज की विचारधारा एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के संदेशों के प्रचार व प्रसार को समर्पित संस्था।
2. विशाल, शानदार, हवादार इमारतें एवं खेल के मैदान की व्यवस्था।।
3. जनरेटर, वाटर कूलर, साफ पानी के लिये आर.ओ. की उत्तम व्यवस्था।
4. नर्सरी से 10+2 (आर्ट्स एवं कामर्स) तक पढ़ाई का समुचित प्रबन्ध।
5. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त सुयोग्य अध्यापकगण।
6. कम्प्यूटर शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, योग एवं खेलों पर जोर।
7. औपचारिक शिक्षा के साथ साथ धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
8. लड़कियों एवं गरीब वर्ग के विद्यार्थियों को विशेष सुविधाएं।
9. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं एवं घरेलू परीक्षाओं में शानदार परिणाम

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल मोगा में दाखिल करवाएं।

बोधराज मजीठिया	सत्यप्रकाश उप्पल	नरेन्द्र सूद	अनीता सिंगला
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

'सुनी मेरे ऋषि ने पुकार थी'

ले०—श्री वीरेन्द्र कुलदीप "साथी"

भारत मां की लुटती हुई लाज की, कटती हुई गऊओं की आवाज की।
सुनी मेरे ऋषि ने पुकार थी,-सुनी मेरे ऋषि ने..........................।।
स्वामी जी कार्य क्षेत्र में आए, पापी घबराए।
वेदों की ज्योति जगाने को, ऋषिवर आए।।

1- छुआछूत की यहां भरमार थी, विधवा जाति करती हाहाकार थी।
गऊओं पे चलती कटारी, रोती थी जनता बेचारी।
सुनी मेरे ऋषि ने..........................।

2- एक ओर पाखण्ड दूसरे ईसाई, धर्म के बादल छाने लगे।
ऋषिवर के तर्कों से, लोग वैदिक धर्म में आने लगे।।
स्वामी जी की हुई जय-जयकार थी-सुनी मेरे ऋषि ने............।

3- वेद पढ़ो औरों को पढ़ाओ, वैदिक धर्म जग में फैलाओ।
''साथी'' कहे भला है इसी में कोई न कमी हो किसी में।।
मातृ-भूमि यही है पुकारती-भारत भूमि यही है पुकारती।

4- जयकारे बोलो सारे ऋषि के, मिल के बोलो प्यारे ऋषि के।
करो लक्ष्य पूरे ऋषि के, पड़े जो अधूरे ऋषि के।।
जिन्दगानी ऋषि ने है वार दी-2,
स्वामी जी कार्य क्षेत्र में आए, पापी घबराए।
वेदों की ज्योति जगाने को-ऋषिवर आए।

ऋषि का निर्वाण

ले०—श्री रणवीर भाटिया

प्राणों का दिया बुझा कर तूने दिवाली का है दीप जलाया।
बलिदान दे कर ऋषिवर तूने भारत का है भविष्य चमकाया।
जब तक चमकता नभ में और सितारों की रहेगी शान।
स्वामी दयानन्द तेरे नाम का लोग करते रहेंगे गुणगान।
अन्धकार में लोग भटक रहे थे तूने उन को है मार्ग दिखलाया।
पोप लीला का किया नाश अन्ध-विश्वास को है दूर भगाया।
वाममार्गियों का भांडा फोड़ा विलासी राजाओं को समझाया।
स्वतन्त्रता का है बीज बोया लोगों को है ज्ञान बोध करवाया।
खत्म न होंगे तेरे उपकार हम कहते थक जायेंगे।
टिमटमाते हैं लाखों दीप दीवाली हम ज्ञान दीप जलायेंगे।
लोगों ने दिया विष तुम को फिर भी तूने दिया अमृतपान।
क्षमा करके प्राण लेने वालों को दे कर पैसे बचाई उस की जान।
इच्छा पूर्ण हो ईश्वर तेरी, उफ न अन्त समय मुंह से निकाला।
हुए जग में हैं बलिदानी अनेकों तेरा ऋषिवर बलिदान निराला
तुम्हारा ऋण हम भारतवासी ऋषिवर कैसे चुका पायेंगे।
जले दिवाली पर लाखों दीप है, पर हम सत्य दीप जलायेंगे।

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल—011/2021-23

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज के नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

2. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

7. सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए।

8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित। सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org